राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 40.00 संख्या 400
ड्रैकुला का अंत
नागराज और सुपर कमाण्डो ध्रुव का विशेषांक
जीतिए
लाखों रुपयों के उपहार। इस विशेषांक में है नागराज मेगा कांटेस्ट का प्रवेश पत्र
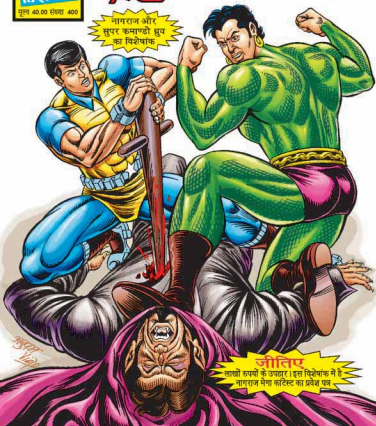
ड्रैकुला। रोंगटे खड़े कर देने के लिए इस नाम का सुनना ही बहुत है। एक ऐसा रक्त पिपासु जिसको नष्ट नहीं किया जा सकता सिर्फ कुछ दिन, साल या सदियों के लिए सुलाकर रखा जा सकता है। क्योंकि ड्रैकुला हमेशा उठ खड़ा होता है। जो सदियों पहले संत यूलोजियन के हाथों मरा, फिर ध्रुव के हाथों मारा गया और नागराज को काटकर गल गया, लेकिन नष्ट फिर भी नहीं हुआ। क्योंकि वह नागपाशा का अमृत मिला रक्त पीकर अविनाशी हो गया था। इस बार उसको मात दी वेदाचार्य की तिलिस्म शक्ति ने * और ड्रैकुला उस तिलिस्म शक्ति के बोझ तले दबकर गायब हो गया। लेकिन यह नहीं था...
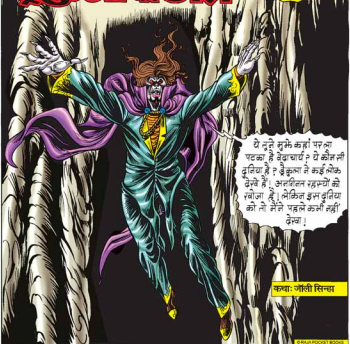
* इस सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें ड्रैकुला का हमला व नागराज और ड्रैकुला

उजाड़, बियावान दुनिया जहां पर न तो जिन्दों का कोई निशान है, और न ही मुर्दों का कोई चिन्ह!
चित्रः अनुपम सिन्हा
फिर मैं खून किसका पियूंगा? जिन्दा कैसे रहूंगा?
इंकिंगः विनोदकुमार
सुलेख एवं रंगः सुनील पाण्डेय
शायद नहीं रहूंगा! ये जरूर वेदाचार्य के तिलिस्म है, और ये उसके तिलिस्म के रक्षक हैं!
और अगर इनमें तिलिस्मी शक्ति है तो ये मुझे नुकसान भी पहुंचा सकते हैं!
सम्पादकः मनीष गुप्ता

ड्रैकुला का सोचना सही था! वह प्राणी उसको नुकसान पहुंचा सकता था-

और ड्रैकुला उस नुकसान से बच नहीं सकता था-

आऽऽऽह! इसका शिकंजा तो बहुत मजबूत है! मैं न तो इसको खोल पा रहा हूं और न ही अपनी अदृश्य होने वाली शक्ति का प्रयोग कर पा रहा हूं!

शायद इस तिलिस्म के अंदर मेरी कोई भी शक्ति काम नहीं करेगी!

खशाक

अपनी सदियों लम्बी जिन्दगी में ड्रैकुला को ऐसा एहसास कभी नहीं हुआ था-

लेकिन फिर भी मुझे छूटने की कोशिश तो करनी ही होगी!

ड्रैकुला का वह वार तो जोरदार था-

लेकिन न तो उस प्राणी पर इसका कोई असर हुआ-

और न ही ड्रैकुला दूसरा वार करने लायक रह पाया-

कचच

अरे! मेरा... मेरा हाथ तो अपने आप जुड़ रहा है! पर कैसे?

आऽऽऽह! मेरा हाथ! इसने तो मेरा पूरा हाथ ही काट डाला... ...अब मैं...

समझा! यह जरूर नागपाश के उस रक्त का कमाल है जिसको मैंने चूसा है! मेरे शरीर में भी अमृत दौड़ गया है!

मेरा शरीर अब सही मायनों में अविनाशी हो गया है!

यानी अब मुझको अपने शरीर के नष्ट होने के डर को भी दूर भगा देना चाहिए! अब मुझको पूरा ध्यान इस जीव को मारने और उसके बाद यहां से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढने में लगाना चाहिए। लेकिन बिना किसी शक्ति के मैं इस भयानक जीव को मारूंगा कैसे?
इसीलिए उसको उस प्राणी से निपटने का कोई रास्ता मुझ नहीं रहा था-
आऽऽऽह! यह मुझको मार तो नहीं सकता, लेकिन मुझको टुकड़ों-टुकड़ों में बांटकर मेरे अंगों को जुड़ने से रोक जरूर सकता है!
और यह वही कर रहा है! पर मैं इसको ऐसा करने नहीं दूंगा!
तिलिस्मी शक्ति मुझसे मेरी सारी शक्तियां छीन सकती है लेकिन मुझसे मेरी असली शक्ति नहीं छीन सकती! और वह शक्ति है मेरी क्रूरता!
ड्रैकुला के हाथों ने उस प्राणी का एक दांत उखाड़ लिया-
ड्रैकुला के सामने ऐसी स्थिति कभी भी नहीं आई थी कि उसको बगैर किसी शक्ति के दुश्मन से जूझना पड़ा हो-
और फिर तलवार की तरह उस दांत को घुमाता हुआ ड्रैकुला का हाथ उस प्राणी के शरीर को कागज की तरह काटता चला गया-

अब भागने से कोई फायदा नहीं है! तुम्हें मुझसे उलझने से पहले ही भाग जाना चाहिए था! अब यहां से कुछ जाएगा तो सिर्फ तेरी जान...
...और मैं! अरे! ये तेज रोशनी एकाएक कहां से चमक उठी! क्या ये भी तिलिस्मी शक्ति का ही वार है!
आऽऽऽह! ये तो सचमुच तिलिस्मी शक्ति का वार ही होगा! क्योंकि इस चमत्कारी रोशनी में यह प्राणी घुल रहा है और यह किरण मुझको भी जला रही है!
ओफ्‌! मुझे इस तिलिस्म से किसी भी तरह से निकलना ही होगा!
तूने मुझे कहां फंसा दिया है, वेदाचार्य?
ड्रैकुला समझ नहीं पा रहा था कि वह किस लोक में पहुंच गया है-

मुसीबत सिर्फ ड्रैकुला पर ही नहीं, कहीं और भी टूट रही थी-
मुझे खून चाहिए! मुझे खून पिला! अपना खून पिला!
ड्रैकुला के दंश ने नागपाशा को वैम्पायर बना दिया है! और मेरी यांत्रिक शक्तियां भी इसको ठीक करने में नाकाम रही हैं! और तो और, ये मुझको पहचान तक नहीं रहा है!

सबसे बड़ी बात तो यह है कि अब तक ये गहरी बेहोशी में था! न जाने इसको अचानक होश कैसे आ गया, और ये मेरा ही खून पीने पर उतारू हो गया! बचाओ! अरे! कोई तो आओ मुझे बचाने के लिए!
तुमको हम जरूर बचाएंगे गुरुदेव! लेकिन एक बात याद रखना...
... दुबारा भागने की कोशिश मत करना! तुम महानगर की सीमा से बाहर नागपाशा को नहीं ले जा सकते! महानगर चारों तरफ से एक तिलिस्म में बंधा है! इसीलिए जब तक नागपाशा महानगर के अंदर है तब तक इसकी शैतानी शक्तियां काबू में रहेंगी! जैसे ही ये महानगर से बाहर गया, वैसे ही ये बेकाबू हो जाएगा जैसे अभी हो गया था!
ओह! नागराज और वेदाचार्य! शुक्र है कि तुम दोनों वक्त पर आ गए! वर्ना मैं भी वैम्पायर बन चुका होता!
लेकिन अब इस मुसीबत का इलाज क्या है? हम भला कब तक नागपाशा को तिलिस्मी वार से बेहोश करते रहेंगे!

इसको ठीक करने का इलाज मैं लेकर आया हूं नागराज!
ध्रुव तुम! और तुम्हारे साथ ये कौन है?
मैं तो महानगर पर वैम्पायरों के हमले की खबर पाकर दौड़ा चला आया!
और ये लोरी है! तंत्र साधिका और संत यूलोजियन की वंशज!
उसी संत यूलोजियन की वंशज जिसकी हड्डियों के क्रॉस ने पहली बार ड्रैकुला का नाश किया था!

लोरी का रक्त नागपाशा के मुंह में टपका-

लेकिन नागपाशा पर कोई असर नहीं हुआ-
अरे! कुछ भी नहीं हुआ! शायद असर धीरे-धीरे सामने आएगा!
नहीं ध्रुव! इस बार ड्रैकुला जब जिन्दा हुआ था तो उसने लोरी के रक्त के खिलाफ भी प्रतिरोधक शक्ति विकसित कर ली थी!
और नागपाशा को ड्रैकुला ने उसके बाद काटा है! अब लोरी का रक्त ड्रैकुला के असर को खत्म नहीं कर पाएगा!
यानी... यानी ड्रैकुला को एक ही तरीके से हर बार नहीं मारा जा सकता! हर बार उसको नए तरीके से मारना पड़ेगा?

हां! और इस बार उसको तिलिस्मी शक्ति ने बेबस किया है! जल्दी ही वह तिलिस्मी शक्ति को भी सहने की क्षमता प्राप्त करके फिर से हमारे सामने आ खड़ा होगा!
फिर... फिर हमको क्या करना चाहिए?
और तब उसको तिलिस्मी शक्ति भी रोक नहीं पाएगी!
मैं जानता हूं! ड्रैकुला नष्ट नहीं हुआ है! तिलिस्मी आंधी ने उसको कहां फेंका है, यह तो मैं भी नहीं जानता! लेकिन एक बात तय है! वह मेरे तिलिस्म के पार नहीं जा सकता! हमारे आस-पास कई अदृश्य लोक हैं! अलग-अलग समय काल में महानगर के स्थान पर ही कई सारी अदृश्य दुनिया हो सकती है!
ड्रैकुला भी उनमें से ही एक दुनिया में होगा!
पर होगा वह महानगर की सीमा के अंदर ही!
मैं साधना से उसका पता ढूंढ़ता हूं!
वेदाचार्य समाधि में लीन हो गए-
"लेकिन मैं सारी पर्तें उधेड़कर भी उसको ढूंढ निकालूंगा-"
मुझे ड्रैकुला की उपस्थिति का आभास मिल रहा है! लेकिन वह आभास बहुत क्षीण है!
वह हमसे ज्यादा दूर तो नहीं है, लेकिन वह जहां पर भी है कई पर्तों में छुपा हुआ है!
ओफ्! दूर-दूर तक कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है!
और... और...

और आस-पास सेकई अन्य तिलिस्मी प्राणी मुझ पर हमला करने के लिए अपने-अपने ठिकानों से बाहर निकल आए हैं!
लेकिन अगर ये तिलिस्मी प्राणी हैं तो ड्रैकुला भी नर्क का शैतान है! ये चाहे दर्जनों हों, सैकड़ों हों या हजारों, ये मेरे कहर से बच नहीं पाएंगे!

ड्रैकुला के पास इस वक्त एक ही हथियार था-
कहर बरपाने की उसकी इच्छाशक्ति-
मेरे नाखून ही बहुत हैं वेदाचार्य के इन तिलिस्मी प्राणियों का बदन फाड़ने के लिए!
ओह! जाले की तरह चारों तरफ फैली ये अजीबो-गरीब रस्सियां मेरा रास्ता रोक रही हैं! मेरी फुर्ती को कम कर रही हैं। और इनकी आड़ में छिपे तिलिस्मी प्राणियों को मुझ पर हमला करने का मौका मिलता जा रहा है!
काफी समय से मैंने खून भी नहीं पिया है! हलक सूख रहा है! ताकत भी कम होती जा रही है। और ये इसका फायदा उठाकर मेरे शरीर के द्रव्यों को चूस रहे हैं!
इनको एक-एक करके रोकने की कोशिश बेकार है!
इनको एक साथ ही रोकना होगाऽऽऽ
आर्र्र्र्घ!
ड्रैकुला की शक्ति के सामने वह 'रस्सी' टिक नहीं सकी-

ड्रैकुला के हाथ जादुई तरीके से हवा में नाचे-
और रस्सियों के छोर फांसी के फंदों का रूप लेते चले गए-
और कुछ ही पलों बाद ड्रैकुला पर हमला करने वाले प्राणी, फांसी की सजा पाए कैदियों की तरह लटके हुए थे-
बड़ी प्यास लग रही है, और तुम कमीनों ने मेरा जरा सा खून पीने की जुर्रत भी की है!
तुम्हारी नसों में दौड़ता द्रव चाहे खून न हो, लेकिन उसमें कुछ तो ऐसा जरूर होगा...
...जो मेरी प्यास को थोड़ी देर के लिए कम कर सके।
ड्रैकुला ने अपने खून का मूल तो मूल, सूद तक वसूल लिया था-
लेकिन असली चमत्कार दिखना तो अभी बाकी था-
अरे! ये... ये क्या? ये रस्सियां तो इन प्राणियों को अपने अंदर खींच रही हैं! ये प्राणी इनके अंदर समाकर गायब होते जा रहे हैं!

क्या मतलब हो सकता है इसका?
अरे!
ओफ्! मैं इन रस्सियों के शिकंजे को खोल नहीं पा रहा हूं, और इनके रेशे मेरे बदन के अंदर भी घुसते जा रहे हैं!
अगर मैंने जल्दी ही कुछ न किया तो ये रस्सियां मुझको भी अपने अंदर खींच लेंगी! पर क्या करूं मैं? कैसे कमजोर करूं इन शिकंजों को?
मामूली रस्सियां ड्रैकुला को खत्म नहीं कर सकतीं।
मैं कमजोर करूंगा इनको! जरूर करूंगा!
अगले ही पल रस्सियों में कसा ड्रैकुला का शरीर गोल-गोल घूमने लगा और रस्सियों में ऐंठन पड़ने लगी-
और जब ऐंठनों का दबाव अपनी सीमा तक पहुंच गया-
तिलिस्मी प्राणियों को लीलने के बाद अब ये रस्सियां मुझको अपने शिकंजे में कस रही हैं!
शायद ये रस्सियां प्राणियों को असफलता का दंड दे रही हैं और उनका अधूरा काम खुद पूरा करना चाह रही हैं!
तो ड्रैकुला का शरीर उल्टी दिशा में घूमने लगा-
ऐंठनें पहले तो खुलीं और फिर रस्सियां विपरीत दिशा में ऐंठने लगीं-
तीन-चार बार लगातार ऐसा करने से 'रस्सियों' के तंतु खिंचकर इतने कमजोर हो गए-

कि ड्रैकुला की बांहे उनको तोड़ सके-
ओफ़! बाल-बाल बचा! वर्ना ये रस्सियां काफी हद तक मुझको अपने अंदर खींच चुकी थीं!
लेकिन ये मेरा पीछा अभी भी नहीं छोड़ रही हैं! मुझको इनसे दूर भागना होगा! किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचना होगा!
पीछे देखकर भागता ड्रैकुला यह नहीं देख रहा था कि वह कहां पर जा रहा है?
आऽऽऽह! ये क्या? आगे एक तिलिस्मी अवरोध है! और अवरोध की उस दीवार में बड़े-बड़े कांटे निकले हुए हैं!
लेकिन... लेकिन इन कांटों के निकलने के स्थान पर छेद बने हुए हैं! और इस अवरोध की दीवार इतनी लचीली है कि मैं इस छेद में अटक कर रस्सियों से बच सकता हूं!
ड्रैकुला उस छेद में घुसता चला गया! और-
लेकिन... लेकिन अब मैं कहां पर आ गया हूं! आसमान से गिरे तो खजूर में अटके! एक तिलिस्म से बचकर भागा तो दूसरे तिलिस्म में आ फंसा हूं! अब क्या करूं मैं? कब तक लड़ता रहूं?
ड्रैकुला लगातार आती मुसीबतों से परेशान हो गया था-

और ड्रैकुला को ढूंढ़ने वाले भी उसकी स्थिति का पता न मिल पाने से तंग आ चुके थे-

ड्रैकुला से आती तरंगें बहुत क्षीण हो गई हैं! अब तो उन तरंगों को पकड़ पाना ही मुश्किल काम है!

मेरे ख्याल से ड्रैकुला को जल्दी ढूंढ़ने का एक कारण और भी है!

ड्रैकुला को जल्दी से जल्दी ढूंढ़कर उनको रोका जा सकता है! हमको ड्रैकुला को ढूंढ़ना ही होगा! ताकि पहले उसके जरिए हम बाकी आत्माओं पर काबू करें और उसके बाद उसको नष्ट करें!

अब ड्रैकुला को ढूंढ़ने में मैं आपकी मदद करूंगी, वेदाचार्य!

अब हमारा या तुम्हारा तो यहां पर कोई काम है नहीं, नागराज! मैं तो वापस राजनगर चलता हूं। तुम भी अपने अपराधियों से निपटने के काम पर लग जाओ!
तुम ठीक कह रहे हो ध्रुव! वैसे कोई भी अपराधी डैकुला के डर से बाहर निकल ही नहीं रहा है, लेकिन फिर भी गश्त तो लगानी ही पड़ेगी!
और जाने से पहले कुछ ऐसा इंतजाम भी करना पड़ेगा कि गुरुदेव और नागपाशा दुबारा न भाग पाएं!
मुसीबतें न तो ध्रुव के लिए खत्म हुई थीं और न ही नागराज के लिए-
अपना सिर उठा रही थीं-
क्योंकि तिलिस्मी घेरे में रहने के बावजूद भी महानगर में नई शैतानी शक्तियां-
गर्र्र्र
र्र्र्र्र्र्र

कहानी 19 पेज से जारी

महानगर पर छाए तबाही के बादल एक बार फिर कहर बरसाने लगे थे-

महानगर पर आई छोटी से छोटी मुसीबत भी नागराज की नज़रों से छुप नहीं सकती थी-
और फिर ये मुसीबत तो महानगर की सबसे ऊंची गगनचुंबी इमारत से भी बड़ी थी-
हे देवकालजयी! ये क्या चीज़ है? देखते ही देखते इतना विशालकाय पेड़ कहां से उग आया? इसमें तो शैतानियत के लक्षण साफ दिख रहे हैं!
शायद लोरी ऐसी ही किसी आने वाली मुसीबत की तरफ इशारा कर रही थी! इस मुसीबत को रोकना होगा!
वर्ना इसकी जड़ें इमारतों की नीवों और शाखाएं इमारतों की दीवारों को देखते ही देखते चूर-चूर कर देंगी!
खच
ये अकेला शैतान महानगर को धूल में मिला देगा! लेकिन तिलिस्मी घेरे में होने के बावजूद भी महानगर में ये शैतानी शक्ति कैसे काम कर रही है?

वेदाचार्य और लोरी की साधना को भी 'विनाश-वृक्ष' ने भंग कर दिया था-
हे ईश्वर! ये क्या हो रहा है? मेरी इतनी कोशिशों के बावजूद भी महानगर में विनाश फैलता ही जा रहा है!
हमने शायद ड्रैकुला और उसके सेवकों की शक्ति को ठीक से आंका नहीं था वेदाचार्य जी!
तुम्हारा तिलिस्म विफल हो गया है गुरुदेव! अब इस शैतानी ताकत को सिर्फ मेरी यांत्रिक शक्ति ही रोक सकती है! खोल दो मेरे बंधन, ताकि मैं इस विनाश वृक्ष को नष्ट कर सकूं!
तुम्हारे नाग बंधनों को सिर्फ नागराज ही खोल सकता है! और मेरा तिलिस्म विफल नहीं हुआ है!... बस मैं तिलिस्म बांधने की हड़बड़ी में एक बात भूल गया था!
वह क्या वेदाचार्य जी?
मैंने तिलिस्म को इस प्रकार बनाया था कि शैतानी शक्ति जीवों के शरीर में रहकर भी काम न कर सके!
लेकिन मैं यह भूल गया था कि जीवन का एक रूप और भी होता है! पेड़ पौधे!
मेरा वर्तमान तिलिस्म, इनमें घुसी शैतानी ताकतों को रोकने में असमर्थ है!

तो आप इस भूल को सुधार क्यों नहीं डालते? आप एक नया तिलिस्म रच डालिए, जो जीवों के साथ-साथ वनस्पति जीवन में भी शैतानी ताकत को पनपने से रोक सके।

ऐसा करने के लिए मुझे पुराना तिलिस्म तोड़ना पड़ेगा और उस तिलिस्म के टूटते ही नागपाशा के साथ-साथ और भी न जाने कितने लोगों के अंदर छुपी शैतानी ताकतें जाग्रत हो उठेंगी।

फिर हम और क्या कर सकते हैं?

अभी तक एक ही वृक्ष में शैतानियत के लक्षण नजर आ रहे हैं।

वेदाचार्य को तिलिस्म की रचना जल्दी से जल्दी पूरी कर लेनी थी–

क्योंकि पूरे महानगर के साथ-साथ नागराज की जान भी खतरे में थी–

सबसे पहले मैं सिर्फ इसमें पैदा हुई शैतानी शक्ति को रोकने के लिए इसके पास तिलिस्म की रचना करता हूं।

बाकी वनस्पतियों में भी अगर शैतानी ताकतें पैदा होने लगीं तो उनसे बाद में निपटेंगे।

तुम तब तक ड्रैकुला को ढूंढने का प्रयास जारी रखो।

इसकी डालें तो अनगिनत हैं। एक दो डालों को काटने से कुछ नहीं होगा।

इस पर कोई ऐसा घातक वार करना होगा जो इसके तने को चीरकर रख दे।

जैसे ध्वंसक सर्पों के गुच्छे का वार!

जिसके धमाके में मिसाइल वार की सी शक्ति होती है।

नागराज के उस वार ने विनाश वृक्ष का सीना फाड़ डाला-
ओह! तना फट गया है! और उसके अन्दर से...
...खून का झरना फूट पड़ा है!
लेकिन विनाश वृक्ष पर इस वार का कोई खास असर नहीं पड़ा है!
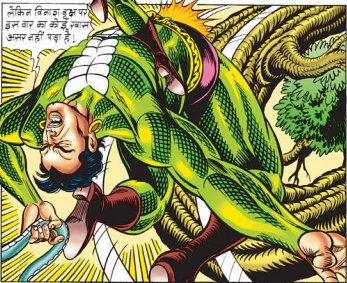
आऽऽऽ ह! वार बहुत जोरदार था! मेरा दिमाग बेहोशी के अंधेरे में डूबता जा रहा है! लेकिन मुझको अपने आपको संभालना होगा! वर्ना ये बेहोशी का अंधेरा मेरे लिए मौत का अंधेरा साबित हो सकता है!
ये पेड़ शैतानी अवश्य है, लेकिन ये सीएक जीवित वस्तु है! और अगर ये जीवित है तो मेरी विष फुंकार का इस पर असर जरूर होगा! लेकिन उसके लिए मुझको इसके 'सिर' के पास पहुंचना होगा! इसकी डालों से बचते हुए!
नागराज की योजना तो ठीक थी-
लेकिन वह इस बात पर ध्यान नहीं दे रहा था कि ऐसा करके वह विनाश वृक्ष के शिकंजे में आता जा रहा था-
इस शिकंजे से बचने का एकमात्र उपाय था विष फुंकार का असरकारक होना-
इतनी तीव्र फुंकार मैंने आज तक कभी नहीं छोड़ी! उम्मीद है कि विनाश वृक्ष पर इसका कुछ तो असर होगा!
फ़ुऽऽऽ

नागराज के इस वार को विनाश वृक्ष के पत्तों ने बेकार कर दिया-
ओह! इतनी तेज हवा! इस हवा में मेरी विष फुंकार तो क्या, मैं भी उड़ा जा रहा हूं!
नागराज के कहीं पैर टिका पाने से पहले ही-
वे शाखाएं उसके शरीर में आ धंसी-
और कुछ ही पलों बाद शाखाओं से बिंधा हुआ नागराज का बेहोश शरीर हवा में झूल रहा था-
विनाश वृक्ष को रोकने का दम अब शायद किसी में नहीं था-

जब तिलिस्म के अंदर शैतानी शक्तियां अपना सिर उठाने में कामयाब हो सकती थीं-
तो इस बात की सिर्फ कल्पना ही की जा सकती थी कि तिलिस्म से बाहर के इलाके में शैतानी शक्तियां किस सीमा तक कहरढा सकती थीं-
राजनगर में-
ड्रैकुला ने इस नर्क के प्राणियों पर इतनी सदियों तक सिर्फ इसीलिए राज किया क्योंकि उसने दिन-रात खून पी-पीकर अपने सेवकों की संख्या बहुत बढ़ा ली थी! वह हजार का खून पीता था तो मैं सिर्फ दो सर काट पाता था!
लेकिन अब ऐसा नहीं होगा! ड्रैकुला के बाद मैं सबसे शक्तिशाली शैतान हूं! अब मैं भी सिर काट-काटकर अपने सेवकों की तादाद बढ़ाऊंगा! बाकी शैतानों की नजरें फिलहाल मुझ पर ही गड़ी हैं! वे चाहते हैं कि मैं असफल हो जाऊं और फिर उनको मौका मिले!

लेकिन मुझे रोकने वाला कोई भी इंसान न तो कभी पैदा हुआ है, और न कभी पैदा होगा!
हा हा हा!
RP
मैं दिन रात इंसानों के सिर काटता रहूंगा, काटता ही रहूंगा! जल्दी ही मेरे सेवकों की संख्या इतनी बढ़ जाएगी कि मैं ड्रैकुला से भी अधिक शक्तिशाली हो जाऊंगा!
उससे पहले हम तुमको वहीं भेज देंगे जहां पर तेरा प्रतिद्वन्द्वी ड्रैकुला गया हुआ है! और वह जगह है 'पता नहीं कहां'!

उसके बाद तुम दोनों आपस में लड़कर यह तय कर लेना कि ज़्यादा शक्तिशाली कौन है!
ड्रैकुला से भी अगर मुकाबला हो गया तो भी जीतूंगा मैं ही! यानी सिरकटा! और वह लड़ाई तुम दोनों भी देखोगी!...
... मेरे गुलामों की हैसियत से!
क्योंकि तब तक मैं तुम दोनों के सिर काट-कर तुमको अपना गुलाम बना चुका होऊंगा!
इस शैतान को रोकना बहुत मुश्किल काम है! और यहां पहुंचने की जल्द-बाज़ी में हमने तो कोई प्लान भी नहीं बनाया है!
प्लान सीधा-साधा है ब्लैक कैट!

ध्रुव के आने तक हमको इसको और हत्याएँ करने से रोकना है! इस शैतान से निपट पाना उसी के बस की बात है!
और ध्रुव कितनी देर में आएगा?
लेकिन हम उतनी देर तक भी इसको कैसे रोकेंगे?
बस इसका हाथ इसकी तलवार तक न पहुंचने दो! बाकी का काम आसान है!
कमांडो हैडक्वार्टर से सूचना मिली है कि वह महानगर से चल चुका है। उसको यहां तक आने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा!
काम इतना आसान नहीं है!
सिरकटा यानी मैं सदियों पहले एक युद्ध में मारा गया था! मेरे बदन में अनगिनत तीर, तलवार और भाले धंसे थे!...
...और वे आज तक मेरे शरीर में धंसे हैं! मेरी शैतानी ताकतों ने मेरे शरीर को हथियारों का कभी न खत्म होने वाला गोदाम बना दिया है!
आहsss
बचकर ब्लैक कैट!
बचते-बचते भी इसका भाला गर्दन को छील ही गया! इसकी फुर्ती लाजवाब है!

राज कॉमिक्स
बड़ाम
लेकिन ये सोलहवीं या सत्रहवीं शताब्दी नहीं है जब युद्ध तीर-तलवारों से लड़े जाते थे! ये इक्कीसवीं सदी है!...और इस सदी का युद्ध धमाकेदार होता है!
उस 'कैट बम' ने सिरकटा के चिथड़े उड़ा दिए!
देखा, चंडिका! सिरकटा हवा में उड़ गया। नर्क की तरफ!
काफी पॉवरफुल बम था! यकीन नहीं होता कि हम ये लड़ाई इतनी आसानी से जीत गए हैं!
...और आज भी नहीं हारेगा!
सिरकटा सिर कटाने के बाद कोई भी लड़ाई नहीं हारा है!...
ओह! ये तो हवा में सही-सलामत खड़ा है! और हम इसके हड़ीले घोड़े को तो भूल ही गए थे!
सबसे पहले इसी को बम से उड़ाना चाहिए था!

उसका मौका तुमको अब नहीं मिलेगा! तुम सिर्फ मेरे घोड़े को ही नहीं, मेरे सेवकों को भी भूल गई हो।

ओह! आज हम इतना भूल क्यों रहे हैं?

हथियार दोनों की गर्दनें उड़ाने के लिए हवा में चल चुके थे-

और उनसे बचने के लिए चंडिका और ब्लैक कैट हिल तक नहीं सकती थीं-

कहानी 35 पेज से जारी

तुमने अगर शैतानियत को फैलाने की कसम खाई है तो मैंने भी तुम सभी शैतानों को जड़ से खत्म करने का बीड़ा उठाया है।
तेरे अंदर मुझे रोकने लायक तो क्या, मुझे छूने लायक शक्ति तक नहीं है! मैं उसे साफ महसूस कर सकता हूं! लेकिन तूने मेरा भयानक रूप अभी देखा नहीं है! इसीलिए तू अभी तक अपने पैरों पर खड़ा है!
ओह! गजब है इसकी शैतानी ताकत! इसका कटा सिर विशालकाय रूप धारण करके...
...खून की नदी उगल रहा है!
और मेरे पैर इस खून के गाढ़े दलदल में फंसकर रह गए हैं! मैं फुर्ती के साथ हिल-डुल भी नहीं सकता!
और ये मेरी गर्दन काटने की तैयारी कर रहा है!
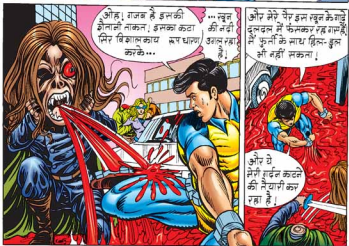
शैतानों के खिलाफ जंग हर जगह पर जारी थी-
ओफ़! इस विनाश वृक्ष की जड़ें तो इमारतों को खोखला करने के साथ-साथ मेरे तिलिस्म को भी बनने से पहले ही तोड़ रही हैं!
अब मैं क्या करूं?
कुछ भी करिए दादा वेदाचार्य! नागराज के पास गिनी चुनी सांसें बची हैं! बगैर 'विनाश वृक्ष' को काबू में किए उस तक पहुंचा नहीं जा सकता!
लेकिन ऊपर चमत्कार हो रहा था! नागराज को जकड़ने वाली डाल-
सूख रही थी-
आऽऽऽह! मैं आजाद हो गया! पर कैसे? मुझे जकड़ने वाली ये डाल सूखकर टूट कैसे गई?
ओह, समझा! मेरे विष ने इस डाल के 'जीवन द्रव्यों' को नष्ट कर दिया है!
यानी मेरा विष इस वृक्ष पर असर डाल सकता है! इसको सुखा सकता है!

विनाश वृक्ष ने अपनी तबाही का क्षेत्र फैलाना शुरू कर दिया था-
वशिष्ठ वेदाचार्य! अब इस वृक्ष ने अपने वैम्पायर गुणों को दिखाना शुरू कर दिया है!
अब ये बेजान चीजों का विनाश करने के साथ-साथ जिन्दा लोगों पर भी हमला कर रहा है!
तुम बच कैसे गए नागराज?
मेरे विष से इसकी डाल सूख-कर टूट गई! इस वृक्ष को मेरा विष मार सकता है!
जैसे ड्रैकुला मुझे काट-कर गल गया था...
...वैसे ही ये वैम्पायर वृक्ष भी मेरे संपर्क में आने से सूख जाएगा!
अगर ऐसा है तो जल्दी करो नागराज! अगर ये वैम्पायर गुण दूसरे पेड़ों में फैल गए तो गजब हो जाएगा! एक बात और...
...अभी तो विनाश वृक्ष द्वारा काटे गए ये इंसान तिलिस्म के कारण सुरक्षित हैं!
लेकिन जब तिलिस्म टूटेगा तो थोड़े बहुत इंसानी वैम्पायर्स को तो हम संभाल लेंगे!
लेकिन अगर संख्या ज्यादा हुई तो मुसीबत और बढ़ जाएगी!

अगर इस विनाश वृक्ष को थोड़े समय तक और छोड़ दिया गया तो वैम्पायरों की तादाद बेहिसाब बढ़ जाएगी!
ओह!
नागराज ने एक खतरनाक योजना बना ली थी-
इसकी एक डाल या जड़ में विष छोड़ने से विष पूरे वृक्ष में नहीं फैल पाएगा!
सिर्फ वह जड़ या डाल सूखकर वृक्ष से अलग हो जाएगी!
अब यह अपनी जड़ों के साथ-साथ पत्तियों का प्रयोग भी गोलियों की तरह कर रहा है। हम तिलिस्मी शक्ति की मदद से जितने इंसानों को बचा सकते हैं, बचाएंगे! तुम विनाश वृक्ष से निपटो!
मुझको इस विनाश वृक्ष के मुख्य तने तक पहुंचना होगा! और उस तने में घुसने का रास्ता बनाकर अपने पूरे विष को उस तने में उगल देना होगा।
ऐसा करके मैं निश्चित रूप से अपनी जान गंवा बैठूंगा!
लेकिन मेरी एक जान हजारों निर्दोषों की जान बचा लेगी!

विनाश वृक्ष को आने वाले खतरे का आभास हो गया था-
उसकी डालें आगे बढ़-बढ़कर नागराज का रास्ता रोक रही थीं-
लेकिन नागराज भी इस बार सतर्क था-
और इस बार विनाश वृक्ष का शिकंजा उसको जकड़ नहीं पा रहा था-
मैं इसके मुख्य विशाल तने तक पहुंच गया हूं! अब बस मुझको इसके अंदर जाने का रास्ता तैयार करना है!
ध्वंसक सर्प के गुच्छों ने-
विनाश वृक्ष के विशाल तने में एक सुरंग बना डाली-
अब ये वृक्ष मुझको अपने तने में दबाकर मेरा कचूमर बना डालेगा!
और मेरा विष इसके तने में घुसकर इसको नष्ट कर देगा!
और विनाश वृक्ष द्वारा उस सुरंग को बंद कर पाने से पहले ही नागराज उस सुरंग में प्रविष्ट हो चुका था-
लेकिन-
नहीं, नागराज! मैं तुमको विष से इस वृक्ष को नष्ट नहीं करने दूंगा!

ओह! मुझको यह पता होना चाहिए था कि इस विनाश वृक्ष के पीछे जिसका भी हाथ है, वह मुझको रोकने की कोशिश जरूर करेगा!
रोकना तो पड़ेगा ही नागराज! क्योंकि तुम जो कुछ करने जा रहे हो, वह तुमको नहीं करना चाहिए!
शैतानों के हिसाब से तो तुम्हारी भाषा काफी अच्छी है! लेकिन तुम्हारे इरादे नेक नहीं हैं!
अब या तो तुम खुद इस विनाश वृक्ष को खत्म कर दो, या मैं तुमको मारकर इसको खत्म कर दूंगा!
नागराज एक शैतान से जूझने जा रहा था-

और ध्रुव एक दूसरे शैतान से जूझ रहा था-
ओऽऽऽ ह! बाल-बाल बचा! वर्ना इसकी तलवार मेरी गर्दन ले उड़ती! इस गाढ़े खून से छूटने का इंतजाम करना ही पड़ेगा!
ओऽऽऽ! मुझे छुटकारा तो मिल सकता है!
हा हा हा! तू खून के तालाब में डुबकी लगाकर बचना चाहता है! लेकिन तू ऐसा करके मेरे जाल में और भी फंसता जा रहा है!
...ताकि मैं आजाद हो सकूं!
कमाल है! तू आजाद हो गया! पर कैसे?
इस कार में भरे पेट्रोल की मदद से! स्टार-ब्लेड की मदद से मैंने कार की टंकी तक पहुंचकर उसको काट डाला!
मैं तेरे जाल में इसलिए फंस रहा हूं...
और पेट्रोल ने रिसकर मेरे आस-पास के खून को अपने अंदर घोलकर इतना पतला कर दिया कि मैं आजाद हो सकूं!

ध्रुव की इस छोटी सी जीत ने चंडिका और ब्लैक कैट का हौसला वापस ला दिया था-
हमको ध्रुव की मदद करनी होगी! इस शैतान को या तो मारना होगा या फिर वापस नर्क जाने के लिए मजबूर करना होगा!
दोनों ही काम असंभव लगते हैं, चंडिका!
लेकिन फिर भी कोशिश तो करनी ही होगी! तुम ध्रुव की मदद करो! मैं कैट क्लॉ से इन सिरकटों को आगे बढ़ने से रोकती हूं!
वाह, ध्रुव! ये आइडिया अच्छा है! इसके शरीर से निकले हथियार शायद इसको मार सकें!
मैं भी यही सोच रहा हूं चंडिका!
लेकिन ये कमाल का योद्धा है!
मुझे पच्चीस दुश्मनों ने घेरकर मारा था! और वह भी धोखे से! तुम तो सिर्फ दो हो! और वह भी नौसिखिए योद्धा!
जल्दी ही तुम दोनों के सिर तुम्हारे हाथों में होंगे और तुम लोग भी मेरे गुलामों में शामिल हो जाओगे!

आऽऽऽ ह! ये जो कह रहा है वह ये कर भी सकता है! और मुझे इसको खत्म करने का कोई भी रास्ता सूझ नहीं रहा है!

सबसे पहले इसको घोड़े से उतारना होगा ध्रुव!

चंडिका एक बार फिर घोड़े को पलटाने की कोशिश में जुट गई-

ध्रुव, चंडिका को वह तरीका बताता गया-

ठीक है! मैं इसका ध्यान बंटाती हूं! तुम इसके सिर से निपटो!

ध्रुव जिस काम को आसान समझ रहा था-
वह वास्तव में काफी मुश्किल था-
खोपड़ी ने विशालकाय रूप धारण कर लिया है!
ओह! जिस सिर को मैं ठीक से पकड़ तक नहीं पा रहा हूं...
...उसको मैं सिरकटा के धड़ से जोड़ूंगा कैसे?
और अभी ये मुझे चबा जाता!
जो करना है जल्दी करो ध्रुव! मैं ज्यादा देर तक अपना सिर नहीं बचा पाऊंगी!

ध्रुव की तो किसी अंजान शक्ति ने मदद कर दी थी-
लेकिन नागराज की मदद करने वाला शायद कोई नहीं था-
हार मान लो नागराज, और वापस चले जाओ! मैं तुमको जिन्दा रहने का एक मौका दे रहा हूं!
तुम मुझको न तो मार सकते हो, और न ही हरा सकते हो! क्योंकि तुम्हारा विष किसी की जान तो ले सकता है लेकिन मेरे जैसे परलोकवासियों के पास जान होती ही नहीं है! फिर हमसे तुम भला क्या लोगे ?
अगर मेरे पास तुम्हारा नुकसान कर पाने की क्षमता न होती तो तुम मेरे सामने आकर मुझे सलाह देने की तकलीफ न करते!

...जब तक तुम्हारे होश सही- सलामत हैं तब तक मुझे हराने का तरीका सोचो!
क्योंकि उसके बाद जब तुम बेहोश होगे तो शायद कभी होश में नहीं आ पाओगे!
कर्रर्रर्र र्र शश्श

विनाश वृक्ष के कहर को वेदाचार्य और फेसलेस ने कुछ हद तक नियंत्रित किया हुआ था-
लेकिन-
समय बीतने के साथ-साथ विनाश वृक्ष और विशाल भी होता जा रहा है और इसकी शक्तियां भी बढ़ रही हैं! जल्दी ही हमारी तिलिस्मी शक्तियां इस पर बेअसर साबित होंगी!
नागराज जल्दी कुछ क्यों नहीं करता!
नागराज एक अनोखे शैतान से जूझ रहा था-
हार मान ले, नागराज! अभी भी मैं तुझे जिंदा छोड़ सकता हूं!
वापस लौट जा! तुझमें शैतानों से निपटने लायक शक्ति नहीं है!
अगर मेरे वार तेरे शरीर के आर-पार हो जाते हैं तो इसका मतलब यह नहीं है कि मैं तुझे मार नहीं सकता!
इसका मतलब सिर्फ इतना सा है...
...कि अब मुझे अपने वार करने का तरीका बदलना पड़ेगा!
ये... ये क्या? तेरे सर्प मेरे आर-पार नहीं हुए...
...बल्कि मेरे सिर के अंदर पहुंचकर रुक गए हैं!
ये गोली या भाले का वार नहीं है जो हवा में रुक न सके!
ये मेरे ध्वंसक सर्पों का वार है!...
...जो तेरे सिर में घुसकर उस समय काउंट-डाउन कर सकते हैं।
जब तक ये फटकर तुझे फाड़ नहीं देते!

मैं कितनी बार कह चुका हूं पर तुम सुनते ही नहीं...

...तुम हम शैतानों को नहीं मार सकते नागराज!

अब देखो मेरी एक और शक्ति! जिसका तुम्हारे पास कोई जवाब नहीं होगा!

देखो! मैं समय की गति को कम कर सकता हूं!

ओह! इसने अपने अलावा चारों तरफ हर चीज की गति को कम कर दिया है! ऐसा लग रहा है जैसे मैं हर चीज को 'स्लो-मोशन' में देख रहा हूं! और इस 'स्लो मोशन' में ये मेरे वारों को आराम से हवा में ही रोक सकता है!

मैंने तुमको एक बार बताया था कि हमारे अंदर कई अद्भुत शक्तियां हैं! और सही वक्त आने पर तुमको एक-एक करके उन शक्तियों का पता चलता जाएगा! उनमें से एक शक्ति ध्वंसक सर्पों का पता तुमको सही समय आने पर बताया गया था! अब तुमको एक नई शक्ति बताने का समय आ गया है!...
ये देखो, ये तिष्क सर्प है! इसके अंदर मानसिक ऊर्जा को कई गुना बढ़ाने की क्षमता है!
ये तुम्हारे मस्तक पर लिपटकर...
... तुम्हारे मानसिक रूप को तुम्हारे शरीर से अलग कर देगा! तुम्हारा ये मानसिक रूप इन शैतानों से निपटने में सक्षम है! क्योंकि मानसिक ऊर्जा ही वह शक्ति है जो मृत्यु के बाद भी इन मुर्दा शैतानों के शरीर और रूप को जिन्दा रखती है!
वाह! लेकिन इस दौरान मेरे हाड़-मांस के शरीर की रक्षा कौन करेगा?
तुम्हारी इच्छाधारी शक्ति नागराज! जब तक तुम मानसिक रूप का प्रयोग करोगे तब तक तुम्हारा शरीर इच्छाधारी कणों में बदलकर अदृश्य रहेगा!
पर याद रखना! मानसिक ऊर्जा की एक सीमा होती है! जैसे ही तुम्हारी मानसिक ऊर्जा खत्म होगी वैसे ही तुम्हारा मानसिक रूप गायब हो जाएगा! और तुम्हारा सामान्य शरीर भी फिर से दिखने लगेगा!

वह बाद में देखेंगे! फिलहाल तो मुझको इस शैतान को खत्म करके, महानगर पर छाए हुए विनाश वृक्ष को खत्म करना है!
नागराज का शरीर अदृश्य हो चुका था-
अब सामने नजर आ रहा था उसका मानस रूप-
आऽऽऽह! तुम्हारा स्पर्श मुझे जला रहा है!
ये तो सिर्फ शुरुआत है!... अभी मैं तुमको नर्क वापस जाने का रास्ता दिखाऊंगा!
तुम मुझे तकलीफ पहुंचा सकते हो, लेकिन मुझे नष्ट करने का तरीका कभी नहीं जान सकते नागराज!

जान सकता हूं! तुम कैसे नष्ट हो सकते हो यह मैं नहीं जानता, पर तुम खुद तो जानते ही होगे! मैं इस मानसिक रूप में तुम्हारा दिमाग पढ़ सकता हूं और उसके जरिए तुमको नष्ट करने का तरीका भी जान सकता हूं!

नहीं!

ऐसा तुम नहीं कर सकते!

कर सकता हूं! देखो, मैंने जान लिया तुमको नष्ट करने का तरीका!

तुम्हारी मौत एक दुर्घटना में छाती का पिंजर टूट जाने के कारण हुई थी! और तुम्हारे दिमाग में हमेशा के लिए उस चोट का घातक डर बैठ गया है!

आह..

मुझको यहां मत मारो! मैं मर जाऊंगा! मैं हार मानता हूं!

मैं ड्रैकुला का खात्मा चाहता हूं और इस अभि- यान में तुम्हारी मदद करना चाहता हूं!

तुमसे लड़ने का मकसद यह जानना था कि तुम वाकई ड्रैकुला का राज खत्म करने की क्षमता रखते भी हो या नहीं!

हो सकता है कि ये कोई ड्रैकुला की ही चाल हो! मैं तुम्हारी बात का भरोसा कैसे करूं?

तुमको यकीन दिलाना तो आसान काम है नागराज! याद करो कि पूरा महानगर तिलिस्म में बंधा है! दुष्टात्माएं तो यहां पर आ ही नहीं सकतीं! लेकिन फिर भी मैं यहां पर हूं! यही सुबूत है इस बात का कि मैं एक अच्छी आत्मा हूं, दुष्ट आत्मा नहीं!

इसको नष्ट करने का सबसे सीधा तरीका तो वही है जो तुम आजमाने जा रहे थे! तुम्हारे विष का इस वृक्ष की नसों में पहुंचना! पर ऐसा करके तुम एक शैतान को नष्ट करके खुद खत्म हो जाते!

फिर ड्रैकुला को भला कौन संभालता! मैंने इसीलिए तुमको अपना बलिदान देने से रोका था! दूसरा कोई तरीका मुझे भी समझ में नहीं आ रहा है!

तुम्हारी बात यकीन करने लायक तो लग रही है!

पर तुम हो कौन? और ड्रैकुला को मारने में मेरी मदद कैसे कर सकते हो?

इसका तो कोई दिमाग भी नहीं है जिसको पढ़कर इसे नष्ट करने का तरीका जाना जा सके!

आहाsss मैं समझ गया इस वृक्ष को नष्ट करने का तरीका जिससे किसी की जान भी नहीं जाएगी और यह वृक्ष भी नष्ट हो जाएगा!

सच? तब तो तुम वास्तव में अत्यंत बुद्धिमान हो नागराज! क्या तरीका सोचा है तुमने?

देखते जाओ! बताने की जरूरत नहीं पड़ेगी! पहले मैं अपना मानसिक रूप छोड़कर सामान्य रूप में आ जाऊं!

नागराज अपने सामान्य रूप में आकर वेदाचार्य के पास जा पहुंचा-

अपने तिलिस्म को तोड़ डालिए वेदाचार्य!

ये... ये तुम क्या कह रहे हो नागराज?

समझाने का वक्त नहीं है वेदाचार्य! आप तुरन्त जाकर महानगर को घेरे हुए अपने तिलिस्म को इस तरह से तोड़िए कि मौका आने पर आप उसको तुरन्त जोड़ भी सकें!
ठीक है नागराज! मैं ऐसा ही करूँगा! पर तुम कहां जा रहे हो?
"नागपाशा के पास"
आहा! तुम आ गए नागराज! हमको जल्दी आजाद करो!
हम विनाश वृक्ष को नष्ट करने में तुम्हारी मदद कर सकते हैं!
मैं मदद लेने ही तुम्हारे पास आया हूं!
उसकी अब जरूरत शायद नहीं पड़ेगी!
ओह! ना... नागपाशा होश में आकर सर्प-बंधनों से आजाद हो गया है!
वाह! तो फिर मुझे आजाद तो करो!
मैं तो मर गया! अब ये मेरा खून पीकर मुझे भी वैम्पायर बना डालेगा!
पर ये होश में आया कैसे?
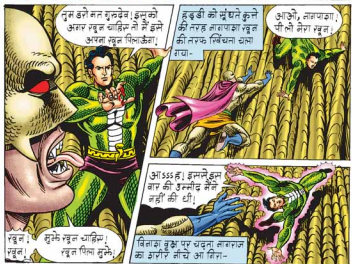
इसको होश में लाने का इंतजाम मैंने किया है! ताकि ये वैम्पायर रूप से मुक्ति पाकर सामान्य हो सके!
पता नहीं ये सामान्य होगा या खून पीकर तुमको और मुझको भी वैम्पायर बना डालेगा! पर मुझे खोलो तो!
तुम डरो मत गुरुदेव! इसको अगर खून चाहिए तो मैं इसे अपना खून पिलाऊँगा!
हड्डी को सूंघते कुत्ते की तरह नागपाशा खून की तरफ खिंचता चला गया-
आओ, नागपाशा! पी लो मेरा खून!
खून! खून!
मुझे खून चाहिए! खून पिला मुझे!
आऽऽऽह! इससे इस वार की उम्मीद मैंने नहीं की थी!
विनाश वृक्ष पर चढ़ता नागराज का शरीर नीचे आ गिरा-

ओफ़! अब ये मेरा खून पीने के लिए बेताब हो रहा है! मैं इच्छाधारी रूप में बदलकर आराम से इससे बच सकता हूँ। लेकिन मेरा मकसद बचना नहीं है, कुछ और है!
सर्प रस्सी ने पेड़ की उस डाल को झुकाकर नागपाशा के 'केप' में अटका दिया-
विनाश वृक्ष की ऊपरी डालों पर जा फेंका-
लेकिन खून के प्यासे नागपाशा का रास्ता अब कुछ भी नहीं रोक सकता था-
आ, नागपाशा आ, पी ले मेरा खून!
और जैसे ही सर्प रस्सी खुली-
झुकी डाल सीधी हो गई-
और उसने नागपाशा को हवा में उछालकर
खतरे का आभास होते ही विनाश वृक्ष ने नागपाशा को जकड़ने की कोशिश की-
समझ में नहीं आ रहा है कि नागराज क्या करना चाहता है! अब तो मेरी भी उत्सुकता बढ़ती जा रही है!
नागराज की यह योजना-

लोरी तक को हिला रही थी-
अरे! ड्रैकुला से आने वाली तरंगें एकाएक तेज हो रही हैं! वह यहीं है! कहीं आस-पास ही है!
लेकिन मेरा शरीर क्यों कांप रहा है? जरूर ये ड्रैकुला के पास से आने वाली उन पाप तरंगों का काम है जो मुझे तेज हवा में हिलते पत्ते की तरह हिला रही हैं!
अब ड्रैकुला मुझसे नहीं बचेगा, मैं उसको ढूंढ कर ही रहूंगी! ढूंढकर ही रहूंगी!
'तिलिस्म' में फंसे ड्रैकुला को भी अपने शरीर में बढ़ती ऊर्जा का आभास हो रहा था-
आऽऽऽह! मुझे शक्ति मिल रही है! मेरी शक्तियां फिर से वापस आ रही हैं!
अब ये तिलिस्मी प्राणी मुझे रोक नहीं पाएंगे! मैं इस तिलिस्म को तोड़-तोड़ कर इस कैद से आजाद होकर ही रहूंगा!
नागराज की विनाश वृक्ष को नष्ट करने की योजना खतरनाक रूप लेती जा रही थी-

इसीलिए नागराज को अपनी योजना को जल्दी से जल्दी पूरा करके इस खतरे को आने से पहले ही टाल देना था-
मैं नागपाशा को खींचकर विनाश वृक्ष के सबसे ऊपरी हिस्से तक तो ले आया हूं! अब विनाश वृक्ष के मुख्य तने में एक वैसा ही रास्ता बनाना है जैसा मैंने पहले बनाया था!
ध्वंसक सर्पों ने विनाश वृक्ष का जुड़ चुका सीना एक बार फिर फाड़ डाला-
और अपनी तरफ कूदते नागपाशा के शरीर को नागराज ने उसी दरार के अंदर जाने का रास्ता दिखा दिया-
और नागपाशा के अंदर गिरते ही-
दरार बंद होती चली गई-

विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: ड्रैकुला का हमला

वह फिर से जिन्दा होकर उठ खड़ा होगा! लेकिन आप अपना तिलिस्म फिर से जोड़ चुके हैं!
अब नागपाशा फिर से जिन्दा तो होगा...
...लेकिन वैम्पायर शक्ति अभी भी उसके अंदर होने के कारण तिलिस्मी शक्ति की मदद से आपको उसे फिर रोकना होगा!
पहली बार तो इसको तुरन्त वश में करने के लिए मैंने इस पर प्रहार किया था!
तिलिस्मी शक्ति इसको अपने आप रोकेगी, नागराज!
वाह, नागराज! अब मुझको पूरा भरोसा हो गया है कि तुम ड्रैकुला को हमेशा के लिए नष्ट कर सकोगे!
ये कौन है?
एक सदआत्मा! गुण! ये ड्रैकुला जैसी दुष्टात्मा को हमेशा के लिए नष्ट करने में हमारी मदद करना चाहता है!
पहले ड्रैकुला को ढूंढने में हमारी मदद करो! उसको खत्म करना तो बाद की बात है!
ड्रैकुला को मारने की तैयारी उसके मिलने से पहले ही करनी होगी! एक बार ड्रैकुला सामने आ गया तो तैयारी करने का मौका फिर हमको कभी नहीं मिलेगा!
ठीक है! वैसे भी लोरी अभी ड्रैकुला को ढूंढ रही है! बताओ कि तब तक हमको क्या करना चाहिए?
ड्रैकुला के समूल नाश की कोशिशें जारी थीं-

लेकिन सिरकटा जैसे शैतान ऐसा कतई नहीं चाहते थे-
बहुत परेशान कर लिया तुम सबने मुझे! इतनी देर तक मैं किसी जिन्दा इंसान से कभी नहीं लड़ा। क्योंकि मुझे इंसानों की गर्दनें काटने में एक पल भी नहीं लगता!
अब तेरी गर्दन काटने में भी मुझे एक पल से ज्यादा नहीं लगेगा!
आssssह!
ओह! ध्रुव ऐसे अपने मकसद में कभी कामयाब नहीं हो पाएगा! कभी इसका सिर इसके धड़ से नहीं जोड़ पाएगा!
मुझे ध्रुव की मदद करनी होगी! इसका ध्यान अपनी तरफ खींचना होगा!
नारियल के निशाने ने सिरकटा का ध्यान तो खींच लिया-
लेकिन उसके बाद जो हुआ-
रव ररर
उसके लिए चंडिका तैयार नहीं थी-

हिल पाने से पहले ही उसकी गर्दन कट चुकी थी-
हा हा हा! मेरे गुलामों में एक और गुलाम का इजाफा हो गया!
हां, मालिक! अब अपने सिर को और तकलीफ मत दीजिए! अब इसका शिकार मैं करूंगी! अपनी जमात में शामिल करूंगी इसको!
ओफ! ओफ! माई गॉड! ये... ये क्या हो गया?
चंडिका का सिर कैसे कट गया? इसकी फुर्ती तो बिजली को भी मात दे सकती थी! यह दृश्य मैं नहीं देख सकता!...

देखने की जरूरत है भी नहीं! क्योंकि तेरी आँखें तो हमेशा के लिए बंद होने वाली हैं!
खच
खचाक
आऽऽऽह!
मैं सब कुछ समझते हुए भी इस पर वार नहीं कर सकता। मेरी नजरों में ये अभी भी चंडिका है! मेरी दोस्त!
दोस्ती मौत की नदी के उस पार तक ही रहती है! मैं मौत की नदी को पार कर चुकी हूं! अब मेरा कोई दोस्त नहीं है! सिर्फ मालिक है मेरा सिर-कटा! और उसका हुक्म मानना ही मेरा मकसद है!
हा हा हा! मुझे इसके जैसे ही किसी गुलाम की तलाश थी जो मेरे काम का बोझ हल्का कर सके!
अब मैं इस लड़के की मौत की तरफ से निश्चिन्त होकर अपने गुलामों की संख्या बढ़ा सकता हूं! और मेरा पहला शिकार होगी ये लड़की!
ब्लैक कैट को इस मुसीबत से अकेले निपटना था-

ओह! इन गुलामों को रोकने के चक्कर में मेरे सारे कैट बम खत्म हो गए हैं। अब ये चारों तरफ से मुझको घेरे हुए हैं और सिरकटा मुझे भी सिरकटा बनाने पर उतारू है!
लेकिन तभी-
हवा में उड़ती वह तलवार सिरकटा के सिर में धंसती हुई-
ब्लैक कैट तलवार की धार से बच नहीं सकती थी-
उस सिर को लिए हुए सिरकटा की गर्दन में आ धंसी-
सिरकटा का सिर और धड़ आपस में जुड़ चुके थे-
घप
आऽऽऽह! ये... ये कैसे हो गया? किसने जोड़ा मेरे सिर को धड़ से? किसको ये रहस्य पता है कि ऐसा होने से मुझे वापस मृत्युलोक वापस जाने पर मजबूर होना पड़ेगा!
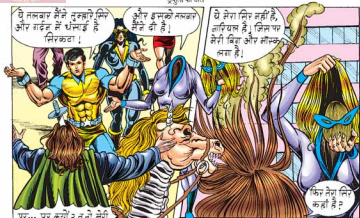
Amaan
ये तलवार मैंने तुम्हारे सिर और गर्दन में धंसाई है सिरकटा!
और इसको तलवार मैंने दी है!
ये मेरा सिर नहीं है, नारियल है! जिस पर मेरी विग और मास्क लगा है!
फिर तेरा सिर कहाँ है?
पर... पर क्यों? तू तो मेरी गुलाम है, इसकी नहीं! तेरा सिर तो मैंने काटा था!
ओह! गायब हो गया सिरकटा! वर्ना मैं उसको उसके सवाल का जवाब जरूर देता!
मेरा सिर मेरे पास है! मेरी पोशाक के अंदर! थोड़ा सिर झुकाना पड़ा और थोड़े कंधे उचकाने पड़े, और मेरा सिर मेरी पोशाक के अंदर चला गया!
तूने... तूने मुझे धोखा दिया! ताकि इस लड़के को मेरा सिर, धड़ से जोड़ने का मौका मिल सके! लेकिन ये...तरीका तुझे पता... कैसे चला?
चलो, सिर कटा का आतंक तो समाप्त हुआ!
अब हमारा आतंक शुरू होगा!

सिरकटा के विफल होने के बाद आतंक फैलाने की बारी अब मेरी है!
और अगर ये भी चित्त हो गया तो मैं जोर आजमाऊंगा!
और फिर मेरी बारी होगी!
यहां पर तो आतंक फैलाने के लिए शैतानों की पूरी लाइन लगी हुई है! हम इनसे लड़ नहीं सकते!
अब हमको क्या करना चाहिए ध्रुव? अगर हम इनको नहीं रोकेंगे तो कौन रोकेगा?
लोरी! वह शैतानों की एक्सपर्ट है! मुझे उसको यहां पर लेकर आना होगा!
तब तक तुम लोग किसी न किसी तरह से इन शैतानों को रोककर रखो!

कहानी 67 पेज से जारी

और ड्रैकुला तिलिस्म से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रहा था-
आsssह! कुछ देर के लिए मेरी शक्ति वापस आ गई थी! मैंने इस तिलिस्म की दीवारों को फाड़ भी डाला था!
लेकिन फिर मेरी शक्तियां, न जाने क्यों फिर से लुप्त हो गईं!
लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि अब मुझे इस तिलिस्म को तोड़कर बाहर निकलने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा!

बाहर-
महानगर में-
अब क्या हुआ, गुरु?
ओफ्!
ड्रैकुला की अनुपस्थिति में दुष्टात्माएं अनुशासन में रहना भूल गई हैं! वे पृथ्वी पर उत्पात मचा रही हैं!
ऐसी ही एक दुष्टात्मा से लड़ रहे एक युवक को मैंने सिरकटा नामक शैतान को मारने का तरीका बताया था!

लेकिन अब दुष्टात्माओं का एक न टूटने वाला तांता सा लग गया है! अब ड्रैकुला को ढूंढ़ना भी जरूरी है, और उसका समूल नाश करने वाले तरीके को ढूंढ़ना भी!
सुनो! क्या तुम लोगों ने कभी ये सोचा कि ड्रैकुला बार-बार जीवित क्यों हो उठता है?

हम तो यही जानते हैं कि वैम्पायर अमर होते हैं! इसीलिए वे राख बनकर भी फिर से जिन्दा हो उठते हैं!
सारे वैम्पायर जिन्दा नहीं हो सकते! सिर्फ वही वैम्पायर बार-बार जी सकते हैं जो 'हृदय-संचरण' की कला जानते हैं!
हां! और ड्रैकुला यह कला जानता है। उसने अपने हृदय को अपने शरीर से अलग करके रखा हुआ है!
उसका शरीर चाहे अमृत पीकर अमर हो चुका है लेकिन उसका हृदय अमृत पीते वक्त उसके शरीर से अलग था!
ड्रैकुला तो अब वैसे भी अमर हो चुका है! लेकिन ये हृदय संचरण कला क्या है?
मैं जानता हूं नागराज! इस कला को जानने वाला अपना हृदय अपने शरीर से अलग कर सकता है! ऐसे हृदय धड़कते कहीं और हैं, लेकिन हृदय धारक के शरीर में जीवन द्रव्यों का संचार होता रहता है!
उसका हृदय अमर नहीं है। अगर उसके हृदय को नष्ट कर दिया जाए तो ड्रैकुला हमेशा के लिए नष्ट हो जाएगा!
हृदय के बगैर शरीर अमर होकर भी बेकार है!
लेकिन ड्रैकुला का हृदय कहां पर है?
उसके किले में! उसका हृदय किसी अत्यंत गुप्त स्थान पर रखा हुआ है!
ऐसा है तो तुममें से किसी सद्आत्मा ने अब तक ड्रैकुला के हृदय को ढूंढ़कर नष्ट क्यों नहीं कर दिया?
यह काम इतना आसान होता तो हमको तुम्हारी मदद की जरूरत क्यों पड़ती?
ड्रैकुला का किला कई गुप्त शक्तियों द्वारा सुरक्षित हैं! उस किले के अंदर की भूल-भुलैया की रक्षा ड्रैकुला की कई अंजान गुलाम शक्तियां करती हैं!
उन शक्तियों से हम भी नहीं जीत सकते! सिर्फ तुम्हारे अंदर उन गुलाम शक्तियों को नष्ट करके ड्रैकुला के हृदय को ढूंढ़ सकने की क्षमता है नागराज!
ऐसा है तो देर क्यों करनी! जब तक वेदाचार्य और लोरी ड्रैकुला को ढूंढ़ेंगे...
...तब तक हम ड्रैकुला के हृदय को ढूंढ़ लाएंगे!

ध्रुव ने लोरी तक पहुंचने में 'फास्ट ड्राइविंग' के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे-

और वह लोरी तक ठीक समय पर पहुंचा था-

चीईई ईई ईई ईऽऽ

लोरी! ओ माई गॉड! ये तो दर्द से तड़प रही है! आधी बेहोशी की हालत में है!

और आस-पास न वेदाचार्य नज़र आ रहे हैं और न ही नागराज!

वैसे तो लोरी को यहीं पर किसी डॉक्टर से दिखवाना चाहिए!

लेकिन मैं यहां पर न तो रुक सकता हूं और न ही लोरी को छोड़कर जा सकता हूं! इसीलिए मैं लोरी को अपने साथ ले चलता हूं! और उम्मीद करता हूं कि राजनगर में किसी डॉक्टर तक पहुंचने तक लोरी ठीक-ठाक रहेगी!

थोड़ा अलग था-
अरे! य... ये मैं कहां आ गया? मैं राजनगर से महानगर सैकड़ों बार आ चुका हूं, लेकिन ऐसी सुरंग तो मैंने पहले कभी नहीं देखी!
अभी आते वक्त भी यह सुरंग रास्ते में नहीं थी! फिर कुछ ही मिनटों में ये सुरंग कहां से आ गई?
खैर! जब आ ही गई है तो पार तो करनी ही होगी!
सुरंग के दूसरे छोर पर रोशनी नजर आ रही है!

... कि मोटरसाइकल ब्रेक लगाने के बावजूद भी रुक नहीं पा रही है! स्टार लाइन कहीं पर अटकाने तक का समय नहीं है! अब बचने का एक ही तरीका है! ये सुरंग काफी संकरी है!

अगर 'फ्रंट व्हील' को लॉक कर दिया जाए तो मोटरसाइकल इसमें अटक सकती है!

ध्रुव ने मोटरसाइकल को लहराया और मोटरसाइकल के पहिए घूमकर दोनों तरफ की दीवारों में आ अड़े-

लोरी! होश में आओ!

कुछ ही पलों बाद डगमगाती लोरी के साथ ध्रुव मोटरसाइकल पर खड़ा हुआ था-

हमारे वजन के कारण ये मोटरसाइकल ज्यादा देर तक अटकी नहीं रहेगी! और नीचे से लावे का ज्वार ऊपर चढ़ता आ रहा है! ऊपर जाने का भी रास्ता नहीं है! अब हम क्या करें, लोरी?

ध्रुव बड़ी मुसीबत में फंस गया था-

और नागराज एक दूसरी मुसीबत में फंसने जा रहा था-
रूमानिया स्थित ड्रैकुला के किले के बाहर-
हम इतनी जल्दी रूमानिया कैसे पहुंच गए गुरु ?
आत्माएं कहीं पर भी विचारों की गति से आ जा सकती हैं। और उसी मानस शक्ति की मदद से मैंने तुमको भी अपने साथ यहां तक पहुंचा दिया है।
लेकिन अब आगे का रास्ता बहुत मुश्किल है। क्योंकि अब हमारा सामना ऐसे प्राणियों से होने वाला है जिनको ड्रैकुला की गुलाम दुष्टात्माओं के नाम से जाना जाता है।
और उनमें भी वही मानस शक्तियां हैं जिनके दम पर हम उनसे लड़ने आए हैं।
अब ओखली में सिर दे ही दिया है तो मूसल को तोड़-कर ही वापस जाएंगे गुरु।
मूसल नहीं!...

... यहां पर बिना बुलाए मेहमानों का कीमा दूसरी तरह से बनाया जाता है!
देख, हमारा कीमा बनाने का तरीका! पहले हम तेरा कीमा बनाएंगे! फिर उसको तेरे ही खून से गूंथकर उसकी रोटी बनाएंगे!
ये...ये आवाज उस घड़ी के अंदर से आ रही है!
बचो, नागराज! ये घड़ी के रूप में नर्क का शैतान है! ड्रैकुला का गुलाम!
बचेगा कैसे! जब बुरीघड़ी चलने लगती है तो दूसरों का बुरा समय आ जाता है! और बुरे समय से कभी कोई नहीं बचा!

नागराज ने तो वार को सह लिया-
धप्प
लेकिन गुण, बुरीघड़ी का वह वार नहीं बचा पाया-
और नागराज के देखते-देखते गुण को बुरीघड़ी ने अपने अंदर समेट लिया-
ओह! जिससे मदद की उम्मीद थी वह तो संभलने से पहले ही पिट गया! और अगर गुण का यह हाल हो सकता है तो मुझे तिष्क सर्प का प्रयोग करके मानस रूप में आने की गलती नहीं करनी चाहिए!
मानस रूप को बुरीघड़ी आराम से खाकर पचा सकता है!
लेकिन अगर मानस रूप का प्रयोग न करूं तो क्या करूं? इसके पेंडुलम की गति तो और तेज होती ही जा रही है!... जल्दी ही ये सचमुच मुझे कीमे के साइज में काट डालेगा!

Amaan
अब तो पेंडुलम के घूमने की गति इतनी तेज हो गई है कि मुझको चारों तरफ सिर्फ आरीदार दांतों वाले पेंडुलम ही नजर आ रहे हैं! सिर्फ कलाबाजी खाकर इनसे नहीं बचा जा सकता! ... इनसे बचने के लिए मुझे ...
... इच्छा-धारी कणों में बदलना पड़ेगा ...
आऽऽऽह!
इस रूप में भी पेंडुलम का स्पर्श मेरे लिए घातक है! ये तरीका भी काम नहीं आएगा!
फिर मैं अपने शरीर को टुकड़ों- टुकड़ों में बंटने से कैसे बचाऊं?
आहाऽऽऽ! समझा! अभी तक मेरा ध्यान पेंडुलम पर ही था! बुरी घड़ी के 'सुन्दर मुखड़े' पर तो मेरी नजर पड़ी ही नहीं थी!
अब मुझे बुरी घड़ी से निपटने का तरीका मिल गया है!

Amaan
नागराज ने अपनी बेल्ट में लगे धातु के सर्प को खोलकर एक नया रूप में मोड़ दिया-
घुरप
और फिर वह धातुई सर्प बुरीघड़ी के मस्तक पर जड़ी घूमती सुइयों के बीच में जा धंसा-
पंखे के ब्लेडों की तरह घूमती सुइयों की बढ़ती रफ्तार एकाएक थम गई-
और उसके साथ ही बुरीघड़ी भी किसी ठूंठ की तरह एकदम स्थिर हो गया-
गर्रर्रर्रर्र
अब दुनिया का अच्छा वक्त शुरू होने वाला है!
ध्वंसक सर्पों के वार ने बुरीघड़ी को टुकड़ों में बिखेर दिया-
बड़ंम
तुम्हारा वक्त खत्म हो गया है बुरीघड़ी!

बुरीघड़ी के नष्ट होते ही उसका शिकार बना 'गुण' आजाद हो गया-
आऽऽऽ ह! मुझे तो लगा था कि अब मुझे अनंतकाल तक बुरीघड़ी की टिक-टिक सुननी पड़ेगी!
बुरीघड़ी जैसे शक्तिशाली पिशाच को खत्म करने का चमत्कार तुमने कैसे किया?
बुरीघड़ी की शक्ति का राज उसकी घड़ी थी गुण! जब मैंने ध्यान से बुरीघड़ी को देखा तो मुझे समझ में आ गया कि जैसे-जैसे बुरीघड़ी के माथे पर लगी सुइयों की गति तेज होती थी, वैसे-वैसे ही उसके खतरनाक पेंडुलम के घूमने की गति भी तेज होती जाती थी!
बस, मैंने उसकी सुइयों की गति को रोक दिया! और ऐसा करते ही बुरीघड़ी जड़ हो गया! फिर उसको नष्ट करना तो आसान काम था!
अब आगे का रास्ता और भी खतरनाक होने वाला है!
अब हमारा किले में आना गुप्त नहीं रहा नागराज! हर एक गुलाम प्रेत को इसकी सूचना मिल चुकी होगी!
मैं खतरों के बारे में नहीं सोच रहा हूं गुण! बल्कि यह सोच रहा हूं कि ड्रैकुला के दिल तक हम कैसे पहुंचेंगे!
कैसे ढूंढेंगे हम ड्रैकुला के दिल को?

और रूमानिया से बहुत दूर-राजनगर के आस-पास किसी अंजान स्थान पर-

और इस कारण से मैं तुमको राजनगर ले जाने के लिए आया था! लेकिन महानगर की सीमा पार करते ही मैं इस मुसीबत में फंस गया!

ड्रैकुला की गुलाम आत्माएं महानगर के अंदर प्रवेश न कर पाने के कारण महानगर की सीमा पर इंतजार कर रही होंगी!

और अब वे अपना कोई जाल रचकर हमको रोकना चाहती हैं! लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि इस जाल को काटने का कोई न कोई तरीका जरूर होगा!

और वह तरीका सिर्फ तुम ही सोच सकते हो! जल्दी करो ध्रुव! आग का ज्वार तो ऊपर चढ़ता ही आ रहा है!

बाहर जाने का कोई न कोई दूसरा रास्ता तो जरूर होगा लोरी! लेकिन वह नजर तभी आएगा जब हम मर चुके होंगे!

हमारे मरने के बाद रास्ता खुलने से क्या फायदा ध्रुव?

अभी कोई सवाल मत करो लोरी! बस जो मैं कहता हूं वह चुपचाप करती जाओ!

सुनो, मेरी 'यूटिलिटी-बेल्ट में दो 'सक्शन कैप' हैं!

ध्रुव, लोरी को अपनी योजना समझाता चला गया-

कुछ ही पलों बाद ध्रुव अपनी मोटर साइकल का 'फ्रंट - व्हील लॉक' खोल चुका था-

और मोटर साइकल तेजी से आग के उठते ज्वार की तरफ फिसलती जा रही थी-

नजर ऊपर की तरफ ही रखना लोरी! चाहे जितना डर लगे पर नीचे आग की तरफ मत देखना!

नहीं देखूंगी ध्रुव! लेकिन मुझे तो डर लग ही रहा है! थोड़ा सा चिल्ला लूं तो शायद डर थोड़ा कम हो जाए!

आSSSS

आSSSS

और ऊपर दीवार में एक द्वार खुलना भी शुरू हो गया है। तुम्हारा सोचना सही निकला ध्रुव!

हमारे मरने का आभास होते ही ये जाल इतना शुरू हो गया है!

अब हम नहीं जलेंगे! सिर्फ ये मोटर साइकल जलेगी! सक्शन कैप की मदद से दीवार पर चिपक जाओ लोरी!

अब जब तक शैतानी शक्तियों को यह आभास हो कि हम मोटर साइकल पर नहीं थे तब तक हमको उस द्वार तक पहुंच जाना है!

ओफ़! शैतानी शक्तियों को पता चल गया है कि आग ने सिर्फ मोटरसाइकल को जलाया है, हमको नहीं! जो द्वार, दीवार में खुला है वह धीरे-धीरे बंद हो रहा है!

और 'सक्शन कैप' के सहारे चिपक-चिपक कर चढ़ते हुए जब तक हम वहां पहुंचेंगे तब तक द्वार पूरा बंद हो चुका होगा!

समय रहते वहां तक पहुंचने का एक ही रास्ता है!

स्टार लाईन खुले द्वार के पार न जाने कहां पर जा अटकी-

और ध्रुव के जूतों में लगे स्केट्स खुल गए-

मुझे कसकर पकड़े रहना लोरी! अब हम स्टार लाइन के सहारे तेजी से ऊपर चढ़ेंगे!

और उम्मीद है कि द्वार के बंद होने से पहले...

... हम द्वार को पार कर जाएंगे!

द्वार की दीवारों ने लोरी और ध्रुव के शरीरों को रगड़ा तो जरूर-

लेकिन उनको पार जाने से रोक नहीं पाई-

ध्रुव और लोरी ने पहले आतंक को तो पीछे छोड़ दिया था-

कहानी 83 पेज से जारी

लेकिन उनके रास्ते का अभी अंत नहीं हुआ था-
सामने एक नया आतंक खड़ा था-
ये... ये हम कहां आ गए हैं ध्रुव? जरूर ये शैतानों का कोई नया जाल है।
मुझे ये समझ में नहीं आ रहा है कि शैतानों ने मुझे यहां आते वक्त क्यों नहीं रोका ? जाते वक्त क्यों रोक रहे हैं ?
हवा में तैरती सीढ़ियां हैं और उनको नष्ट कर रही हैं गिरती बिजलियां।
अब यहां से हम कैसे निकलेंगे?
वैसे बिजलियों का रुख इस सीढ़ी की तरफ नहीं है जिस पर हम खड़े हैं। इसीलिए जब तक हम इस पर खड़े हैं तब तक हम सुरक्षित हैं। लेकिन यहां से बाहर जाने का एकमात्र रास्ता वही नजर आ रहा है, जहां से ये बिजलियां गिर रही हैं।

महानगर में नागराज के वापस आने का इंतजार कर रहे वेदाचार्य एकाएक चौंक उठे-
क्या हुआ वेदाचार्य? आप ऐसे चौंक क्यों रहे हैं?
हमारे द्वारा बनाए गए तिलिस्म ने किसी को घेर लिया है! और... और तिलिस्म में घुसे उस प्राणी ने तिलिस्म का पहला सुरक्षा कवच तोड़ दिया है!
अब वह दूसरे और अंतिम सुरक्षा कवच से घिरा हुआ है!
अगर उसने दूसरे चरण को भी तोड़ दिया तो तिलिस्म टूट जाएगा और ड्रैकुला आजाद हो जाएगा!
ये... ये आप क्या कह रहे हैं? इस दुनिया में ऐसा कौन है जो आप द्वारा बनाया गया तिलिस्म तोड़ सके?
जो भी ये काम कर रहा है वह ड्रैकुला का कोई साथी ही हो सकता है!
हमको उसे रोकना होगा! हर कीमत पर!
वर्ना दुनिया में प्रलय आ जाएगी!
आओ फेसलेस! हमको अपने ही बनाए तिलिस्म के अंदर घुसना है!
एक रहस्य तो खुल गया था-
ध्रुव और लोरी शैतानों के जाल के अंदर नहीं, बल्कि वेदाचार्य के तिलिस्म के अंदर फंसे हुए थे-
लेकिन अभी यह रहस्य बना हुआ था कि ड्रैकुला जैसे शैतानों को रोकने के लिए बना तिलिस्म ध्रुव एवं लोरी को क्यों रोक रहा था?

चारों तरफ से प्रेत हम पर टूटने के लिए तैयार हैं नागराज! हमारे पास ज्यादा वक्त नहीं है। जल्दी सोचो कि ड्रैकुला के दिल का पता हमको कैसे लग सकता है?
एक तरीका समझ में आ रहा है गुण! जहां पर ड्रैकुला का दिल होगा वहां पर प्रेतों का पहरा सबसे कड़ा होगा! मैं किले में चारों तरफ अपने जासूस सर्पों को छोड़ देता हूं! जहां पर इनको रोकने की सबसे ज्यादा कोशिश की जाएगी, ड्रैकुला का दिल वहीं पर होगा।
लेकिन उस तक पहुंचने के लिए तुझे मरकर जिन्दा होना पड़ेगा! अगर तू ऐसा कर सकता है तो तू मालिक का दिल जरूर ढूंढ लेगा!
ये प्रेत अचानक कहां से आ गया?
ओ! इसके वार से तो मैं इस ऑयल पेंटिंग के...

...अंदर घुसाजा रहा हूं!
जहां पर तेरा सामना काउंट ड्रैकुला के रेखारूप से होगा। और इस पेंटिंग की दुनिया से तू जिन्दा बाहर कभी नहीं निकलेगा क्योंकि ये पेंटिंग की दुनिया मेरी दुनिया है। यहां पर जो मैं चाहता हूं वही होता है!
और इस ऑयल पेंटिंग से वापस बाहर जाना असंभव है!
ओफ़! मैं इस पेंटिंग की दुनिया में फंस गया हूं। और अगर, भाग्य की मदद से मैं ड्रैकुला के रेखारूप से जीत भी गया तो बाहर किले में कैसे पहुंचूंगा!
हर शख्स एक मुसीबत में फंसा हुआ था! नागराज भी-

और ध्रुव भी-
हम तो मारे गए ध्रुव! अगर सचमुच बाहर जाने का रास्ता वही स्थान है तो वहां तक हम पहुंचेंगे कैसे?
पहुंचना तो पड़ेगा ही लोरी! और वह भी जल्दी! क्योंकि वहां तक पहुंचने का एकमात्र रास्ता ये सीढ़ियां ही हैं। और इनके नष्ट होने से पहले ही हमको इनका इस्तेमाल कर लेना है!
वहां तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों को जोड़ना पड़ेगा! और उसके लिए रस्सी चाहिए! हमारे पास तो कोई रस्सी है ही नहीं!
रस्सी का काम तो मेरी 'स्टार लाइन' कर सकती है, लेकिन वह विद्युत की सुचालक होती है! उसका इस्तेमाल करना ठीक नहीं है!
वहां तक पहुंचने का एक तरीका है, लोरी! बस हमको सीढ़ियों को पकड़कर एक-दूसरे में अटकाना होगा और अपना संतुलन बनाए रखना होगा!
कुछ ही देर की मेहनत ने ध्रुव और लोरी को उनकी मंजिल के करीब लाकर खड़ा कर दिया था-
वाह ध्रुव! तुम्हारी संतुलन बनाए रखने की कला तो लाजवाब है!
बचपन में सीखी ये कला कई बार मेरी जान बचा चुकी है लोरी!

अब हम बिजलियों वाले इस छेद के पार कैसे जाएंगे?
मैंने ध्यान दिया है कि बिजलियां कड़कने के बीच में कुछ अंतराल होता है! लेकिन वह अंतराल इतना कम होता है कि एक बार में हममें से कोई एक ही पार जा सकता है!
ठीक है! तो पहले मैं इस छेद में कूदती हूं! ताकि अगर कोई गड़बड़ हो जाए तो तुम उसे संभालने के लिए बचे रहो!
विश यू लक, ध्रुव!
गुड लक, लोरी!
लोरी को उस 'द्वार' के पार जाने से पहले ही खींच लिया गया-
ओऽऽऽ
ओऽऽऽ
हमने! तुम इस द्वार के पार नहीं जा सकतीं, लोरी!
अभी मैं भस्म हो जाती! किसने किया यह?
वेदाचार्य! और फेसलेस! आप लोग यहां पर कैसे?
संभलकर ध्रुव! ये कोई चाल लगती है!
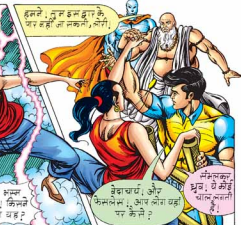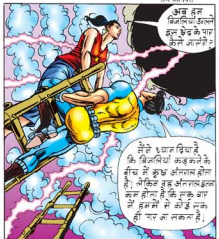
ये जरूर शैतानों की चाल है! शैतान, वेदाचार्य और फेसलेस का रूप धारण करके हमको फंसाने आए हैं। ये नहीं चाहते हैं कि हम इनके जाल को तोड़ें!
तुम्हारा कहना सही हो सकता है भोरी! लेकिन ये चाहे असली वेदाचार्य हों या उनके रूप में शैतान आत्माएं, हमको ये अवरोध तो पार करना ही है! क्योंकि बगैर इसको पार किए हम राजनगर तक नहीं पहुंच सकते!
तुमने अगर अपना इरादा पक्का कर लिया है तो हमारे पास भी तुमको जबरन रोकने के अलावा और कोई चारा नहीं है!
सीढ़ियां ताश के महल की तरह ढहती चली गई-
और-
अब तुम दोनों की जांच करके यह पता लगाना होगा कि तिलिस्म आखिर तुम दोनों को महानगर से बाहर जाने से रोक क्यों रहा था!
जांच एक-एक करके ही हो सकती है! इसीलिए जब तक हम भोरी की जांच करें तब तक तुमको विद्युत कारागार में रहना होगा, ध्रुव!
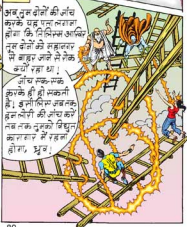
हम गलती कर सकते हैं लेकिन तिलिस्म गलती नहीं कर सकता! जरा इसकी ध्यान से जांच करना फेसलेस!
तिलिस्म! यानी हम तिलिस्म में हैं! तब तो ये सचमुच असली वेदाचार्य हैं! लेकिन मेरे पास इनको समझाने का वक्त नहीं है! मुझे जल्दी से जल्दी लोरी के साथ राजनगर पहुंचना है!
न जाने अब तक चंडिका और ब्लैक कैट जिन्दा होंगी भी या नहीं! पर लोरी के पास पहुंचने के लिए मुझको इस विद्युत कारागार से निकलना होगा! पर अगर मैंने ऐसी कोशिश की तो विद्युत मुझे जलाकर खाक कर देगी!
अब कैसे निकलूंगा मैं इस कारागार से? और उससे भी बड़ा सवाल यह है...
...कि लोरी को लेकर मैं ऊपर तैर रहे द्वार तक अब पहुंचूंगा कैसे?
एक तरीका है! लेकिन मुझे ध्यान रखना होगा कि वेदाचार्य मुझ पर वार न कर पायें!
और लोरी की जांच पूरी हो पाने से पहले ही-
आऽऽऽह! मुझको ये टक्कर किसने मारी?

ये टक्कर मैंने मारी है!
ध्रुव! तुम... तुम विद्युत कारागार से आजाद कैसे हुए?
बिजली की सी फुर्ती से ध्रुव ने दोनों के हाथों को उन के पीछे बांध दिया-
आपकी तिलिस्मी सीढ़ियों की मदद से! विद्युत लकड़ी पर असर नहीं करती! यही सोचकर मैंने स्टार ब्लेड्स की मदद से सीढ़ियों को काटा और स्टार लाइन की मदद से ये रोलर बना डाला!
हाथ बांधने के लिए माफी चाहता हूं वेदाचार्य! लेकिन मैंने देखा है कि आप तिलिस्मी शक्ति हाथों से ही छोड़ते हैं!
इसीलिए ये करना जरूरी है!
ठीक है ध्रुव! तुमने हमको तो रोक लिया! लेकिन अब बगैर हमारी मदद के तुम इस तिलिस्म के द्वार तक कैसे पहुंचोगे?
एक रास्ता बंद होता है तो दूसरा रास्ता खुल जाता है फेसलेस!
तैरती सीढ़ियों के ऊपर दौड़ते ध्रुव ने गति पकड़ी-
अब तो इतनी सीढ़ियां भी नहीं बची हैं जो तुमको उस ऊंचे द्वार तक पहुंचा सकें!
वहां तक हमको पहुंचाएगा बांसों को जोड़ कर बना ये लंबा बांस!

और बांस का छोर उस सीढ़ी में जा अटका, जिसको वेदाचार्य और फेसलेस का वजन स्थिर रखे हुए था-
बांस का दूसरा छोर तेजी से हवा में उठकर तिलिस्म के द्वार की तरफ बढ़ा-
बस! अब इस वक्त बिजली न चमक उठे!
बिजली नहीं चमकी-
और ध्रुव तथा लोरी के शरीर उस छेद को पार करते हुए-
तिलिस्म के पार जा गिरे-
आह! हम सफल हुए! लोरी, होश में आओ! अब हमको जल्दी से जल्दी राजनगर पहुंचना है!
लेकिन लोरी की हालत अभी भी ठीक नहीं थी-
आऽऽऽह! ओऽऽऽह!
ये... ये तुमको क्या हो रहा है लोरी!
इसकी इस हालत के जिम्मेदार तुम हो ध्रुव!
वेदाचार्य!
इसका कारण है...
हां, ध्रुव! और तुम ये जरूर जानना चाहोगे कि लोरी क्यों तड़प रही है!

पक्के तौर पर तो नहीं कह सकते लेकिन मेरा अनुमान है कि मेरे द्वारा पैदा की गई तिलिस्मी आंधी ने ड्रैकुला को सूक्ष्मजीवी के आकार का बनाकर किसी वस्तु... जैसे कि पेड़ के अंदर डाल दिया होगा! और फिर वहां से ड्रैकुला का संपर्क लोरी के शरीर से हुआ होगा और वह लोरी के शरीर में पहुंच गया होगा! यही कारण था कि तिलिस्म लोरी को महानगर से बाहर जाने से रोक रहा था!

वेदाचार्य का अनुमान एकदम सही था! ड्रैकुला के साथ ऐसा ही हुआ था! पहले वह वृक्ष के अंदर ही था! और जब उसी वृक्ष ने ड्रैकुला द्वारा काटकर वैम्पायर बनाए गए सूक्ष्मजीवों को निगल लिया था तो वही वृक्ष वैम्पायर गुणों से युक्त होकर वैम्पायर विनाश वृक्ष बन गया था-

सूक्ष्मजीवियों को और ड्रैकुला को कष्ट पहुंचाने वाली प्रकाश किरणें सूर्य की किरणें थीं-

और ड्रैकुला के शरीर में धंसने वाले काले कांटें लोरी के रोएं थे-

क्या अब ड्रैकुला को रोकने का कोई तरीका नहीं है?

ड्रैकुला जिस वार से एक बार हारता है दूसरी बार नहीं हारता! क्योंकि उसका शरीर उस वार के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता पैदा कर लेता है!

हम कोशिश तो जरूर करेंगे लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि इस बार भी ड्रैकुला पर यह तिलिस्मी शक्ति असर करेगी!

ड्रैकुला एक बार फिर दुनिया के सामने आने वाला था-

हा हा हा! देखा नागराज! तस्वीर की इस दुनिया के अंदर मैं तुझे अपनी फूंक की हवा की धार से भी काट सकता हूं! बता तेरा क्या हाल करूं? आग से जला दूं या ठंड से गला दूं! या तुझे यहां की जमीन में गाड़कर हमेशा के लिए दम घुटने के लिए छोड़ दूं!

आऽऽऽह!

मुझे जासूस सर्पों के संकेत मिल रहे हैं! उनको जबरदस्त प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है!

ओह! इस बात पर तो मैंने ध्यान ही नहीं दिया! अगर तस्वीर के अंदर रहते हुए भी सर्पों के संकेत मुझ तक पहुंच सकते हैं तो मेरे संकेत भी उन तक पहुंच जाएंगे! लेकिन वे मेरी मदद कैसे करेंगे?
इस तस्वीर के अंदर आते ही वे भी ड्रैकुला के रेखाचित्र के वश में आ जाएंगे! इससे तो मुझे खुद ही निपटना पड़ेगा! पर कैसे?
आsss ह!
ड्रैकुला-रेखारूप के वार नागराज को घायल करते जा रहे थे-
और नागराज के वारों को ड्रैकुला रेखारूप आराम से काटता जा रहा था-
आsss ह!
हाथ झुलस गया है! और मुझको जबरदस्त पीड़ा भी हो रही है!
और... और ये आग बुझ नहीं रही है! बढ़ती ही जा रही है! जल्दी ही ये आग मेरे पूरे शरीर को घेरकर मुझे भस्म कर देगी! इसको बुझाना होगा!
और इस काम में खेत में लगी ये फसल मेरी मदद कर सकती है!
इसमें लुढ़कने से मेरे शरीर में लगी आग जरूर बुझ जाएगी!
क्योंकि ये फसल भी पेंटिंग का ही एक हिस्सा है!

ओहो! तूने अपने शरीर में लगी आग को लुढ़क-लुढ़ककर बुझा लिया है! और अब तू इस खेत में छुपकर बचना चाहता है। अब देख कि मैं इस खड़ी फसल को कैसे काटता हूं। फिर ठीक उसी तरह से मैं तुझे काटूंगा!
ओफ़! इसके हथियार तो फसलों को काटते हुए मेरे भी काफी पास से गुजर रहे हैं!
और फसलों के कटने से पौधों से कुछ तेल जैसा पदार्थ निकल रहा है जिसने मेरे हाथों को चिकना कर दिया है।
और इस तेल की महक भी...
...अरे! अगर ये तेल वही है जो मैं सोच रहा हूं तो मेरा काम बन गया!
हा हा हा! तो तू मरने के लिए सामने आ ही गया! यानी अब कहीं जाकर तू ये समझ पाया है कि तड़प-तड़पकर मरने से कोई फायदा नहीं है! ले, मैं अभी तेरी यंत्रणा का अंत कर देता हूं!
अंत तो अब तेरा होगा, ड्रैकुला के स्वरूप!
ये... ये तूने मेरे मुंह पर क्या फेंका है?

ये तेरी मौत है ड्रैकुला के रेखारूप! इस पेंटिंग में बनी फसल में वे बीज हैं जिनसे ऑयल पेंटिंग के रंगों को घोलने वाला तेल निकलता है। और अब ये तेल तुझे भी घोल डालेगा क्योंकि तू भी आयल पेंट से बना हुआ है!

अगर पेंटिंग के हथियारों में मुझे काटने की शक्ति है तो पेंटिंग के बीजों के तेल में रंगों को घोलने की शक्ति भी जरूर होगी!

ठीक कहा तूने नागराज! ये तेल मुझे घोल डालेगा! लेकिन ये तेल मेरे साथ-साथ पूरी तस्वीर को भी घोल डालेगा! और तस्वीर के साथ-साथ...

ओऽऽऽह! ये मैंने क्या कर डाला? अपनी मौत का सामान खुद ही तैयार कर लिया! मुझे इस तस्वीर से बाहर निकलना ही होगा! पर कैसे? क्या रास्ता है इस तस्वीर से बाहर निकलने का?

वह प्रेत! हां, मैं इस तस्वीर में तभी घुसा था जब उस प्रेत ने मुझे तस्वीर के अंदर घुसाया था!

अगर उस प्रेत में तस्वीर के अंदर घुसाने की शक्ति है तो बाहर निकालने की शक्ति भी होगी! बस, वह प्रेत अगर गायब नहीं हुआ हो तो मेरा काम बन जाएगा! मुझे अपने सर्पों से मानसिक संपर्क साधना होगा!

नागराज के मानसिक संकेतों के इशारे पर किले में घूमते जासूस सर्पों ने गुण के शिकंजे में जकड़े उस प्रेत के हाथ को जकड़ लिया-

और फिर- वह हाथ पेंटिंग की दुनिया में जा घुसा-

नागराज ने
उस हाथ को थामने में एक पल भी नहीं गंवाया-

अब प्रेत का काम समाप्त हो चुका था-

बधाई हो नागराज! इस तस्वीर से जिन्दा बाहर आने वाले तुम पहले प्राणी हो!

तुम अगर प्रेत को रोक-कर न रखते तो मैं ये कभी न कर पाता! अब आओ! मुझे शायद ड्रैकुला के दिल का पता लग गया है!

ड्रैकुला का 'दिल' अभी भी नागराज की पहुंच से दूर था-
लेकिन ड्रैकुला का शरीर आजाद हो रहा था-
ड्रैकुला वाकई लोरी के शरीर के अंदर है! वह लोरी के शरीर को फाड़कर बाहर आना चाहता है! कुछ कीजिए वेदाचार्य!
मैंने लोरी की नस काट दी है ध्रुव! अब लोरी का लहू बाहर बहेगा! और उसके साथ-साथ...
...ड्रैकुला भी आजाद हो जाएगा!
इस पर वार करो फेसलेस! तिलिस्मी शक्ति का संयुक्त वार शायद इसको संभलने से पहले ही काबू में कर सके!
अब तिलिस्मी शक्ति ड्रैकुला का कुछ नहीं बिगाड़ सकती! अब ड्रैकुला का कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता! क्योंकि ड्रैकुला ने अमृत चख लिया है!
आऽऽऽह! अब मुझे रोकना तेरे बस की बात नहीं है, बुड्ढे!
आऽऽऽह!
अब हम इसको नहीं रोक सकते!

चलो तुम्हारी एक परेशानी तो दूर हुई ध्रुव! ड्रैकुला के फिर से जी उठने के कारण अब प्रेतों का कम्पीटिशन भी खत्म हो गया होगा! अब राजनगर पर मंडराता खतरा भी टल गया होगा!
लेकिन हम पर मंडराता खतरा कैसे टलेगा लोरी?
इस महावैम्पायर को रोकेगा मेरा महावैम्पायर! नागपाशा!
तिलिस्म टूटते ही नागपाशा ने होश में आकर मेरा खून पीने की कोशिश की और इस कोशिश के कारण मैं नागबंधनों से आजाद हो गया, और मुझको यांत्रिक शक्ति को प्रयोग करने का मौका मिल गया!
फिलहाल नागपाशा सुप्तावस्था में है। और ये मेरी यांत्रिक शक्ति के इशारे पर नाच रहा है!
हालांकि यह ज्यादा देर तक सुप्तावस्था में नहीं रहेगा! लेकिन उस दौरान ये ड्रैकुला का सारा खून पीकर इसके शरीर का अमृत नष्ट कर देगा!

काम इतना आसान नहीं था जितना कि गुरुदेव समझ रहा था-
काम बहुत मुश्किल था-
हम सही जगह पर पहुंचे हैं नागराज!
ड्रैकुला का दिल इसी ताबूत के अंदर है!
लेकिन ताबूत की रक्षा ड्रैकुला के चुनिंदा खूंखार सेवक कर रहे हैं!

तभी-
नागराज! ड्रैकुला आजाद हो गया है! इससे पहले कि उसको तुम्हारे इरादों की भनक लगे, अपना काम पूरा कर लो!
अभी नागपाशा ने ड्रैकुला को रोक रखा है! तिलिस्म भी टूट चुका है! इसलिए हमको नागपाशा की मदद के बजाए उन इंसानों से जूझना पड़ रहा है जिनको विनाश वृक्ष ने वैम्पायर बना डाला था!
क्या हुआ नागराज?
बड़ी गड़बड़ हो गई है गुरु! ड्रैकुला जिन्दा हो गया है! अब इससे पहले कि वह यहां आ धमके, हमको उसका दिल हासिल कर लेना है!
ड्रैकुला के इन सेवकों में हमको घंटों तक रोके रखने की क्षमता है, नागराज! फिर भला हम 'दिल' तक कैसे पहुंचेंगे?
एक ही रास्ता है गुरु! अब मुझे मानस रूप में बदलने का खतरा उठाना ही पड़ेगा!
हालांकि इस रूप में ये आत्मायें मुझ पर हावी हो सकती हैं, लेकिन इसके अलावा अब और कोई रास्ता नहीं है!
निष्क सर्प!

नागराज का मानस रूप सामने आते ही उसका सामान्य शरीर इच्छाधारी कणों में बदलकर अदृश्य हो गया-
अब क्या करोगे नागराज? ताबूत तक तो तुम अभी भी नहीं पहुंच पाओगे! अक्!
...तो ताबूत को अपने पास लाना होगा!
ठीक कहा तुमने गुण! लेकिन अगर हम ताबूत तक नहीं पहुंच सकते...
मानस नागराज फर्श में घुसता जा रहा है!
ओह! हम पहली मंजिल पर हैं! वह भू-तल पर जा रहा है! पर क्यों?
जल्दी ही जवाब मिल गया-
मैंने मानस रूप में बदलने से पहले ध्वंसक सर्पों को ताबूत के नीचे बिछा दिया था!
अब फर्श टूट गया है, और ताबूत के साथ-साथ...
...ड्रैकुला का दिल भी मेरे पास आ गया है! अब मुझे मानस रूप-त्याग कर सामान्य रूप में आना होगा!
मेरे साथ आओ गुण!
पर कहां नागराज?
हम बाहर कैसे जाएंगे?
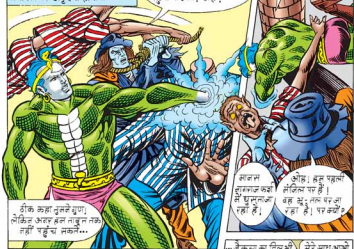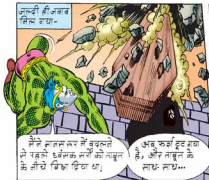
...ड्रैकुला के शैतान सेवक हमारा पीछा नहीं छोड़ेंगे! और किले के अंदर हम पर इनकी शक्तियां भारी रहेंगी!

घबराओ मत गुण! हम जमीन के नीचे से जाएंगे! मेरे सर्पों ने सुरंग पहले से ही खोद रखी है!

और हमारे पीछे से मेरे सर्प सुरंग को बंद भी करते जाएंगे! ड्रैकुला के सेवक हमारे पीछे नहीं आ पाएंगे!

ड्रैकुला को रोक पाना अब शायद नागराज और गुण के लिए भी मुश्किल होने वाला था-
क्योंकि ड्रैकुला अजेय हो चुका था-
हट जा मेरे रास्ते से नागपाश! वैसे तो मैं तेरा अमृत मिश्रित रक्त पूरा पी भी लेता! लेकिन एक वैम्पायर दूसरे वैम्पायर का रक्त नहीं पी सकता! इसीलिए मैं तुमको सिर्फ टुकड़ों में काट-काटकर छोड़ दे रहा हूं!
वैसे भी अपने ही गुलाम वैम्पायरों को नष्ट करना मेरी आदत नहीं है!
यह नागपाश की नहीं, बल्कि मेरी हार है! सो रहे नागपाश को मैं यांत्रिक शक्ति की मदद से ठीक तरह से कंट्रोल नहीं कर पाया...
...पर अब क्या होगा? कैसे रुकेगा ड्रैकुला?
जिस दुनिया पर राज करने का सपना हम देख रहे थे उस पर ड्रैकुला जैसी शैतानी ताकत का राज हो जाएगा!
अब मैं इंसानों को वार करने का मौका नहीं दूंगा! अगर ड्रैकुला को दुबारा परेशान करने का दुस्साहस किया गया तो पूरी धरती को मैं एक दूसरा नर्क बना दूंगा! आग के दरिए में बदल दूंगा धरती की सतह को!
ओह! ड्रैकुला ने समुद्र के अंदर छुपे ज्वालामुखी को ऊपर उठा दिया है!

देखो नमूना कि ड्रैकुला धरती को नर्क कैसे बनाएगा! देखो!
गाऽऽऽ ऽऽऽ
ज्वालामुखी उस इशारे के साथ फट पड़ा-
ओ गॉड! अब हजारों टन लावा महानगर को बरबाद कर देगा!
और हम किसी को बचाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते!
लेकिन मैं कर सकता हूं!
अरे, वाह! लावा फिर से ज्वालामुखी में वापस समा रहा है!
किसने किया है ड्रैकुला का रास्ता रोकने का अपराध?

ये शुभ काम मैंने किया है ड्रैकुला! अब तुम्हारे तबाही फैलाने के दिन खत्म हुए! रिटायरमेंट ले लो और अपने ताबूत में जाकर हमेशा के लिए सो जाओ!
वर्ना तुम्हारा अस्तित्व हमेशा के लिए मिट जाएगा! देखो, तुम्हारा दिल हमारे पास है! और इसमें अमृत का अंश नहीं है! यह नष्ट हो सकता है! ...
... और इसके नष्ट होते ही तुम भी नष्ट हो जाओगे!
तुमने मुझसे गद्दारी की है गुरु! तुमने ही नागराज को मेरे दिल तक पहुंचने का रास्ता दिखाया है!
अब मैं सिर्फ इंसानों को ही नहीं तुम्हारी जैसी आत्माओं को भी तड़पाऊंगा!
अगर तुम सब दर्दनाक मौत नहीं मरना चाहते तो मेरा दिल मुझे दे दो!
इससे बहस करके समय क्यों खराब कर रहे हो नागराज? इसके दिल को नष्ट क्यों नहीं कर देते?

क्योंकि इसके दिल को तभी नष्ट किया जा सकता है जब यह दिल ड्रैकुला के शरीर के अंदर हो! सिर्फ इसी स्थिति में दिल और ड्रैकुला का शरीर दोनों नष्ट हो सकते हैं!
लेकिन ड्रैकुला के शरीर में जाते ही इस दिल में रक्त के साथ-साथ अमृत का संचार भी हो जाएगा। फिर यह दिल भी अमर हो जाएगा। तब इसको नष्ट कैसे करोगे?
इसके लिए गुण हमारी मदद करने के लिए तैयार है! जैसे ही ड्रैकुला का दिल इसके शरीर में पहुंचेगा, गुण समय की रफ्तार को कम कर देगा! और इसका रक्त इसके दिल तक पहुंचने से पहले ही वह एक क्रॉस को इसके दिल में घुसा देगा! ...
...लेकिन अगर ऐसा न हो पाया तो ड्रैकुला फिर कभी खत्म नहीं होगा!
क्या खुस-पुस कर रहे हो? अपने चारों तरफ मंडराते खतरों को देखो! मेरे एक इशारे पर पूरी दुनिया के इंसान देखते ही देखते प्रेतों में बदल जाएंगे!
और मैं ऐसा नहीं चाहता!
क्योंकि फिर मैं खून किसका पियूंगा!
और रही दिल की बात! तो वह तुमको देना ही पड़ेगा!
ओह! इसके दिल ने तो एकाएक तेजी से धड़कना शुरू कर दिया है! मैं इसको ठीक से पकड़ नहीं पा रहा हूं!
लो ड्रैकुला! पकड़ो अपना दिल! और दफा हो जाओ!
जो मैं चाहता था वही हो गया!
हा हा हा! तुम उतने बेवकूफ नहीं हो, जितना मैं समझ रहा था!
उससे कहीं ज्यादा हो!

क्योंकि एक बार तेरा दिल मेरे पास आ गया तो फिर मुझको किसी भी खतरे का डर नहीं...
... अरे! तूने मेरा दिल बीच में ही लपक लिया! एक मामूली इंसान की इतनी हिम्मत!
ध्रुव ने एक आखिरी कोशिश तो की थी-
लेकिन उसकी यह कोशिश काफी नहीं थी-
कड़ाक
आऽऽऽह!
दुबारा कभी ऐसी हरकत की तो तेरा सीना फाड़कर तेरा दिल उसमें से बाहर निकाल लूंगा!
ड्रैकुला का दिल उसके शरीर में घुसते ही-
गुण ने अपना काम शुरू कर दिया-
चारों तरफ समय धीमी गति से चलने लगा-
और गुण वह लकड़ी का क्रास लेकर तेजी से ड्रैकुला की तरफ लपका-
हाTTTssssss
लेकिन ड्रैकुला अपने स्थान से गायब हो चुका था-
मुझे पता था तू अपनी इसी शक्ति का प्रयोग करेगा गुण!

इसीलिए मैंने अपने हृदय को अपने शरीर में अंदर डालने के साथ अदृश्य होने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी थी। जब तक तूने समय की रफ्तार को कम किया तब तक मैं अदृश्य हो चुका था। तेरी चाल नाकामयाब रही, गुण गद्दार!
गुण के होश खोते ही समय की गति सामान्य हो गई-
तुम्हारा कहना सच हो गया, ध्रुव! अब तो ड्रैकुला का हृदय भी अमृत पीकर अमर हो चुका है!
अब दुनिया का विनाश रोकना बहुत मुश्किल है!
नहीं, नागराज! अभी भी बात नहीं बिगड़ी है! ये देखो, ग्रीज का मिनी स्प्रे! जिसको मोटरसाइकल में डालने की वजह से मैं हमेशा अपने यूटिलिटी बेल्ट में रखता हूं! मैंने ड्रैकुला के हृदय पर इस स्प्रे द्वारा ग्रीज की एक पर्त चढ़ा दी है। अब कुछ देर तक इस पर्त के कारण उसके हृदय का संपर्क उसके रक्त से नहीं हो पाएगा! हमको इसी दौरान ड्रैकुला को इस क्रॉस से खत्म करना है!
गुड वर्क ध्रुव! ये हमारे पास आखिरी मौका है!

अपने अमरत्त्व पर गुमान कर रहे ड्रैकुला को अपने ऊपर होने वाले किसी भी हमले के कामयाब होने की फिक्र नहीं थी-
इसीलिए असावधानी में वह नागवार बचा नहीं पाया-
और उसके जमीन पर गिरते ही नागराज और ध्रुव ने वह क्रॉस उसके सीने में घुसाने में एक पल भी नहीं गंवाया-
घच्च
अब तेरा अंत होगा ड्रैकुला! क्योंकि तेरा हृदय अभी अमर नहीं हो पाया है! अब अपने हृदय के साथ-साथ तू भी खाक में मिल जाएगा!
आऽऽऽह! मैं मरा! मर गया मैं! मेरे दिल में क्रॉस घुस गया है!

अरे, दूर हट!
ये... ये क्या, ध्रुव? इस पर तो क्रॉस घुसने का कोई असर ही नहीं हुआ!
क्योंकि क्रॉस मेरे दिल में नहीं धंसा है!
तुम इंसान ये समझते हो कि जहां पर तुम्हारा हृदय लगा होता है, हर शरीर में वहीं पर हृदय मौजूद होगा। अरे, अक्ल के अंधो, ये भी तो सोचो कि जो वैम्पायर हृदय को शरीर से दूर रख सकता है...
... वह अपने शरीर में सीने के बजाय हृदय को कहीं और भी रख सकता है!
मेरे शरीर में मेरा हृदय कहां पर है...
... यह तुम मरते दम तक भी नहीं जान पाओगे।
क्योंकि तुम्हारी मौत का वक्त कुछ ही पल दूर है!
इन दोनों से दूर हट ड्रैकुला! मेरे वार चाहे तुझे मार न पाएं...
... लेकिन तुझे रोक कर तो रख ही सकते हैं!
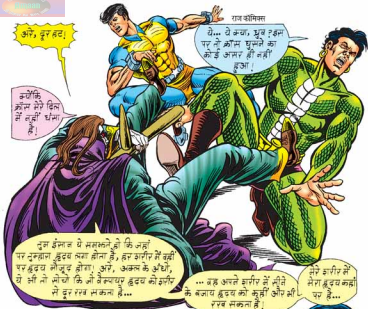
आऽऽऽह! थैंक्स लोरी! दिल अभी तक तेजी से धड़क रहा है। ऐसा लग रहा है मानों मेरी गर्दन किसी लोहे के शिकंजे में...
... ओह! मुझे मिल गया इसके हृदय को ढूंढने का तरीका!
नागराज, लोरी, वेदाचार्य, फेसलेस, गुरुदेव, आप सभी ड्रैकुला पर अपनी भरपूर शक्ति से वार करें और बिना रुके करते रहें!
इस समय कोई भी ध्रुव से सवाल पूछ कर समय व्यर्थ करने के मूड में नहीं था-
हमला तुरन्त शुरू हो गया-
इस तरह से हम ड्रैकुला को कुछ देर के लिए और रोक लेंगे! लेकिन इससे फायदा क्या होगा?
होगा नागराज होगा! ड्रैकुला जितना हमारी शक्तियों का प्रतिरोध करेगा...
... इसका दिल उतनी ही तेज गति से धड़केगा!...

और सर्प शक्ति से युक्त तुम्हारे कान उस धड़कन को सुनकर ड्रैकुला के हृदय की सही स्थिति का पता लगा सकते हैं! और एक बार हमको सही स्थिति का पता लग जाए तो फिर हम ड्रैकुला के हृदय में क्रॉस घुमाकर उसको खत्म कर सकते हैं!
कड़ड़ड़म
धड़ड़ड़
धड़ड़म
मैं ड्रैकुला की धड़कन सुनने की कोशिश करता हूँ!
पता नहीं इतने शोर में वह धड़कन सुनाई देगी भी या नहीं!
ड्रैकुला पर बिना रुके वारों की बरसात होती जा रही थी-
और उसके दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी-
मिल गया! मुझे इसके हृदय का पता मिल गया ध्रुव! इसका हृदय इसकी बांई जांघ में रखा हुआ है!
फिर देर किस बात की है, नागराज! अब तो बस इस क्रॉस को उठाकर...

इसके हृदय में घुसा देना है।
शक्क
ध्रुव का हाथ घुमा-
और इस बार ड्रैकुला का हृदय बच नहीं सका-
क्रॉस ने हृदय को चीरकर रख दिया-
आsss्ह
और इस बार ड्रैकुला सचमुच चीख उठा-
तुम लोगों ने मेरे हृदय को कैसे ढूंढ़ निकाला ? आsss्ह! कैसे पता चला तुमको इसकी स्थिति का... आssssह!
और... और मेरा हृदय अमर क्यों नहीं हुआ?
ड्रैकुला का शरीर एक बार फिर धूल में बदलता चला गया-
दुनिया पर छाया आतंक खत्म हो चुका था-

अब चारों तरफ शांति थी-

तुम दोनों ने तो वाकई कमाल कर दिया ध्रुव और नागराज! पर ड्रेकुला के खत्म होने से नागपाशा को लगातार काटते यंत्र भी लुप्त हो गए हैं! नागपाशा फिर से वैम्पायर बन जाएगा! अब उसको तुरन्त ठीक करना बहुत जरूरी है!

सिर्फ नागपाशा ही नहीं, महानगर में दर्जनों ऐसे इंसान हैं जो वैम्पायर के रूप में बदल गए हैं! उनको भी सामान्य बनाने का तरीका ढूंढना होगा!

मैं बहुत देर से ये सोच रहा था कि मैं जब भेड़िया वैम्पायर के काटने से वैम्पायर बन गया था तो फिर मैं ठीक कैसे हुआ! तब मुझको ध्यान आया कि वैम्पायर बनने के बाद जब मैं संपोनी से लड़ रहा था तो मैं कब्रिस्तान की जमीन में सुरंग बनाकर अंदर घुसा था और इस दौरान कब्रिस्तान की मानव अवशेषों से सनी मिट्टी मेरे मुंह में चली गई थी! ☉

मुझे पूरा यकीन है कि उस मिट्टी में मौजूद तत्वों ने ही मेरे शरीर में दौड़ रहे वैम्पायर तत्वों को नष्ट करके मुझे सामान्य बना दिया था!

ऐसा हो सकता है नागराज! अब मैं पूरे महानगर में कब्रिस्तानों की मिट्टी को तिलिस्मी आंधी के जरिए बिखेर कर वैम्पायरों को सामान्य इंसान बना सकता हूं!

☉ इस सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: नागराज और ड्रेकुला

क्योंकि ड्रैकुला अभी मरा नहीं है! मरते-मरते ऐन वक्त पर मेरे हृदय में रक्त का संचार होने लगा और मैं फिर से जी उठा!
अब मैं कभी नहीं मरूंगा! मैं अमर हूं! मेरा हृदय अमर है! मेरी शक्तियां अमर हैं! अब अमर है ड्रैकुला!
ओफ! अब तो वेदाचार्य और फेसलेस भी गुरुदेव तथा नागपाशा को लेकर जा चुके हैं! तिलिस्मी आंधी की मदद से वैम्पायरों को ठीक करने के लिए!
अब यहां पर सिर्फ हम तीन हैं, इसका मुकाबला करने के लिए!
ओह! इसके हृदय पर ग्रीज का असर अगर एक सेकेण्ड के लिए भी और रहता तो ये मर चुका होता!
लेकिन अब ये कभी नहीं मरेगा!
क्योंकि अब और कोई तरीका बचा ही नहीं है इसको मारने का!
ओह! हवा तेज चलने लगी है!
ये जरूर वेदाचार्य द्वारा चलाई गई तिलिस्मी आंधी है!

आ थू थू! हवा में कब्रिस्तानों की धूल उड़ रही है! और...और यह ड्रैकुला को भी थोड़ा बहुत परेशान कर रही है!
अगर इस वक्त इसको ओह! ड्रैकुला को खत्म करने का एक तरीका अभी बचा हुआ है!
लेकिन उस तरीके को पूरा करने के लिए तुमको और लोरी को मिलकर काम करना पड़ेगा नागराज!
ऐसा कौन सा तरीका अभी बचा हुआ है ध्रुव?
ध्रुव तेजी से अपनी योजना को लोरी तथा नागराज को समझाता चला गया-
और फिर, लड़खड़ाते ड्रैकुला को लोरी के उस वार ने हवा में उठाकर-
ज्वालामुखी के मुहाने पर जा पटका-
अब देर मत करो नागराज! वर्ना ड्रैकुला को सँभलने का मौका मिल जाएगा!
ऐसा नहीं होगा ध्रुव! मैं अपने मानस रूप में बदल चुका हूँ! मुझे ड्रैकुला तक पहुँचने में एक पल भी नहीं लगेगा!
ड्रैकुला अभी ठीक से अपने पैर जमा भी नहीं पाया था-
कि नागराज के वार ने उसको ज्वालामुखी के अंदर रवाना कर दिया-

ड्रैकुला ने संभलकर ऊपर आने की कोशिश की! लेकिन 'मानस नागराज' ने उसको सफल नहीं होने दिया-
वह ड्रैकुला के शरीर को तब तक धकेलता चला गया-
जब तक दोनों लावे की नदी में गोता नहीं लगा गए-
नागराज के मानस रूप को तो लावा छू भी नहीं सका-
लेकिन ड्रैकुला का शरीर लावे की तपन से गलता चला गया-
और ड्रैकुला के गलते ही ज्वालामुखी एक बार फिर समुद्र तल की तरफ धंसने लगा-
ज्वालामुखी समुद्र में समा रहा है!
यानी नागराज सफल हो गया!
इस बार ड्रैकुला का अंत हो गया है!
तुम एक बात भूल रहे हो ध्रुव! और वह ये कि ड्रैकुला अमर है! लावा उसको गलाएगा जरूर, लेकिन वह फिर से सामान्य रूप में आ जाएगा!
और ऐसा होते ही लावा फिर से उसको गला देगा! वह फिर बनेगा और फिर गल जाएगा!
और यह प्रक्रिया तब तक चलती रहेगी जब तक पृथ्वी के गर्भ में लावा मौजूद है!
ड्रैकुला अब नष्ट हो चुका है नागराज!

और फिर-
नागपाशा से तो वैम्पायरों के लक्षण लुप्त हो गए थे! लेकिन उसके ठीक होते ही गुरुदेव और नागपाशा न जाने कहां भाग खड़े हुए!
उनको तो एक न एक दिन पकड़ ही लेंगे, वेदाचार्य! फिलहाल तो महानगर में वैम्पायर बने लोगों को स्वस्थ करना आवश्यक था!
यह अब तक का दुनिया पर छाने वाला शायद सबसे बड़ा संकट था, ध्रुव और नागराज! जिसे तुम दोनों के अद्भुत दिमाग और शक्तियों ने आसानी से टाल दिया! ड्रैकुला अभी चाहे मरा न हो, लेकिन वह मरे के बराबर ही है!
यह शायद सच हो सकता है। लेकिन फिर भी मुझे न जाने क्यों ऐसा आभास हो रहा है जैसे अभी एक खतरे का झोंका आना बाकी है!
तुझे सही आभास हो रहा है लड़की! तुम लोगों ने मेरे शरीर को तो एक कभी न खत्म होने वाले विनाश चक्र में फंसा दिया है। लेकिन मेरी आत्मा अभी भी आजाद है। अब मैं तलाश करूंगा शक्तिशाली शरीरों की और फिर मचाऊंगा दुनिया में...
कोलाहल!

समाप्त.